# आत्मधर्म

वर्ष ३६ : अंक ७ [४२७] जनवरी, १९८१

कहाँ/क्या


१. **संपादकीय : सूरज डूब गया**
२. **जीवंत समयसार**
- पंडित बाबूभाई चुन्नीलाल मेहता, फतेपुर
३. **इस युग के आध्यात्मिक युगपुरुष**
- श्री सेठ लालचंद हीराचंद, बंबई
४. **जैन समाज के आध्यात्मिक स्तंभ**
- श्री साहू श्रेयांसप्रसादजी जैन, बंबई
५. **हम नतमस्तक हैं**
- श्री सुकुमारचंदजी जैन, मेरठ
६. **महान क्रांतिकारी प्रवक्ता**
- श्री एस.डी. नागेंद्र शास्त्री, हसन
७. **सदा सावधान रहना है**
- पंडित फूलचंदजी सिद्धांताचार्य, वाराणसी
८. **अपूरणीय क्षति**
- सर सेठ भागचंदजी सोनी, अजमेर
९. **परमोपकारी सद्गुरुदेव**
- श्री शुभकरनजी सेठिया, सरदारशहर
१०. **वे देह में रहकर भी 'विदेह' थे**
- डॉ० सागरमलजी जैन, वाराणसी
११. **युगपुरुष स्वामीजी**
- पंडित कैलाशचंद्रजी सिद्धांताचार्य, वाराणसी
१२. **अमृत वर्षा के लिए लोग लालायित रहेंगे**
- श्री अनूपचंदजी न्यायतीर्थ, जयपुर
१३. **अध्यात्म का सूर्य अस्तंगत**
- पंडित प्रकाशचंद 'हितैषी', नई दिल्ली
१४. **महान प्रचारक खोया**
- डॉ० पन्नालालजी साहित्याचार्य, सागर
१५. **एकमात्र आत्मा की बात करनेवाले संत**
- डॉ० देवेन्द्रकुमारजी जैन, इंदौर
१६. **चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः**
- श्री त्रिलोकचंदजी जैन, जयपुर
१७. **जो भुलाये नहीं जा सकते**
- पंडित नन्हेलालजी जैन, राजाखेड़ा
१८. **सागर-से गंभीर, चंद्रमा-से शीतल और आकाश-से विशाल**
- डॉ० भागचंद्रजी जैन 'भास्कर', नागपुर
१९. **बीसवीं शताब्दी के आध्यात्मिक महापुरुष**
- डॉ० दरबारीलालजी कोठिया, वाराणसी
२०. **अलौकिक प्रतिभासंपन्न संत**
- श्री उदयचंद्रजी जैन, वाराणसी
२१. **जैन अध्यात्मवाद के आधुनिकयुगीन सर्वोपरि प्रस्तोता**
- डॉ० ज्योतिप्रसादजी जैन, लखनऊ
२२. **स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा**
- श्री यशपालजी जैन, नई दिल्ली
२३. **आत्मधर्म के महान प्रभावक**
- पंडित बंशीधरजी शास्त्री, जयपुर
२४. **स्वामीजी की सेवायें अमूल्य हैं**
- डॉ० हरीन्द्रभूषणजी जैन, उज्जैन
२५. **उनकी वाणी मेरे हृदय में बसी हैं**
- मुनि श्री माणकविजयजी
२६. **उनका उपकार कभी भुलाया नहीं जा सकेगा**
- क्षुल्लक श्री सुरत्नसागरजी
२७. **उनके बताये मार्ग पर अडिग रूप से चलता रहूँ**
- श्री पूरणचंदजी गोदीका, जयपुर
२८. **अध्यात्म-जगत में वे सदा रहेंगे**
- प्रो० प्रवीणचंद्रजी जैन, जयपुर
२९. **दिगंबर समाज पर उनका महान उपकार है**
- श्री राजेंद्रकुमारजी जैन, मेरठ
३०. **संपूर्ण जैन जगत की अपूरणीय क्षति**
- श्री नरेंद्रप्रकाशजी जैन, फिरोजाबाद
३१. **अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किये**
- डॉ० राजकुमारजी जैन, आगरा
३२. **यह सब उनके आशीष का ही फल है**
- श्री शीलचंद्रजी जैन शास्त्री, मेरठ
३३. **श्रद्धांजलियाँ**



संपादक : **डॉ० हुकमचन्द भारिल्ल** प्रबंध संपादक : **अखिल बंसल**, एम०ए०

प्रकाशक : **श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट** सोनगढ़ (भावनगर-गुजरात)

कार्यालय : **श्री टोडरमल स्मारक भवन**, ए-४, बापूनगर, जयपुर ३०२००४

मुद्रक : सोहनलाल जैन, जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर

# संपादकीय

## सूरज डूब गया

पूज्य गुरुदेवश्री के निधन से लाखों आत्मार्थियों के हृदय-कमलों को खिला देनेवाला, मोह-तिमिर को हटा देनेवाला, प्रकाशपुंज सम्यग्ज्ञान का सूरज डूब गया है।

सूरज तो संध्या को डूबता है, पर प्रात:काल फिर उग आता है; किंतु यह सूरज तो डूबा सो डूबा। अब ऐसा प्रात:काल कभी न होगा, जब हमें इस प्रतापवंत-प्रकाशपुंज सूरज के दर्शन हो सकेंगे।

यद्यपि उनके देहावसान की तुलना इस अर्थ में सूर्यास्त से नहीं की जा सकती तथापि उस अनुपम ज्ञान के घन-पिंड और आनंद के कंद की उपमा आखिर दें तो किससे दें? एक सूरज ही तो ऐसा है, जिससे इस प्रकाशपुंज की तुलना की जा सकती है।

स्वामीजी के प्रताप और प्रकाश दोनों ही सूरज के प्रकाश और प्रताप से किसी प्रकार कम न थे। स्वामीजी भी अपने क्षेत्र के एक सूरज ही तो थे।

सूर्य की प्रभा तो इस लौकिक अंधकार को ही दूर करती है, पर आपकी ज्ञानप्रभा ने—वाणीरूपी किरणों ने तो आत्मार्थी जिज्ञासुओं के हृदयों के अज्ञानांधकार को दूर किया है। लोकांधकार दूर करनेवाला यह सूर्य तो लौकिक है, पर आप तो लोकोत्तर मार्ग में व्याप्त अंधकार के विनाशक थे, अत: आप अलौकिक सूर्य थे।

जिसप्रकार सूर्य का प्रताप और प्रकाश गहरी गुफाओं के निविड़ अंधकार को भी चीरता हुआ उनके अंतिम छोर को भी पा लेता है। यद्यपि सूर्य का प्रकाश व प्रताप खुले मैदान में अपनी जैसी प्रभा बिखेरता है, वैसी प्रभा गहन गुफाओं में नहीं दिखाई देती, तथापि गहन गुफा के अंतिम कोने में भी यह तो परिलक्षित हो ही जाता है कि अभी दिन है; दिनकर की आभा वहाँ भी पहुँच ही जाती है।

उसीप्रकार हे गुरुदेव! आपके प्रभाव और प्रताप ने उन लोगों के हृदय और बुद्धि को तो आलोकित किया ही है, जो खुले मैदानों के समान खुले दिमाग के लोग थे; पर साथ में उन लोगों को भी प्रभावित किया है, जो आपसे किसी कारण असहमत थे, विरोध भाव रखते थे या फिर गहन अंधकार में थे।

जिसने जीवनभर आपका विरोध किया—ऐसा जैनगजट (९-१२-१९८०) पत्र भी आपके निधन पर अपने संपादकीय में लिखता है:—

''उन्होंने अपेन जीवन में करीब ६५ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा व ३५ वेदी-प्रतिष्ठायें करवाईं और श्वेताम्बर बंधुओं को दिगम्बरी बनाया। समयसार व मोक्षमार्गप्रकाशक जैसे ग्रंथों के पठन-पाठन की लहर समाज में दौड़ाई तथा स्वाध्याय के प्रचार का बिगुल बजा दिया। विरोध होता रहा लेकिन विरोध को सहते हुए दिगम्बर धर्म के प्रचार या प्रसार में किसी भी प्रकार की कसर उठा नहीं रखी।

आबाल-वृद्धों में दिगम्बर धर्म का प्रचार किया और रात्रिभोजन, जमीकंद आदि का त्याग उनके प्रभाव से स्वत: उनके अनुयायी करते गए।

देश में सोनगढ़ एक प्रकार का प्रसिद्ध स्थान बन गया जहाँ से उन्होंने जिनवाणी का तन-मन से जीवनपर्यंत साधना करने के साथ ही साथ देश में यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रचार किया। शिक्षण-शिविर के द्वारा एक नई दिशा देकर धर्मपचार की एक अद्‌भुत योजना समाज को दी।

प्राय: यह देखा गया है कि सम्प्रदाय बदलनेवाले अंत में पथभ्रष्ट भी होते रहे हैं लेकिन स्वामीजी सदा लोहपुरुष बनकर रहे।

स्वामीजी के उठ जाने से वास्तव में एक महान प्रतिभासंपन्न व पुण्यात्मा आध्यात्मिक वक्ता का सदा के लिए अभाव हो गया है।

गजट परिवार भी उनके देहावसान पर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ वीर प्रभु से प्रार्थना करता है कि स्वामीजी को पूर्ण रत्नत्रय की प्राप्ति होकर शीघ्र मुक्ति लाभ हो।''

और अभी अनेक इसप्रकार के उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। इससे सिद्ध है कि आपकी पहुँच प्रतिकूलों पर भी थी।

यद्यपि वे चले गए हैं तथापि उन्होंने अपने जीवन में जो अभूतपूर्व कार्य किये, वे आज भी विद्यमान हैं, उनका दिया हुआ तत्त्व आज भी उनके चेतन शिष्यवर्ग और अचेतन साहित्य के रूप में हमें उपलब्ध है। इस रूप में वे अमर हैं, आज भी हमारे बीच विद्यमान हैं।

यद्यपि तारे दिन में भी होते हैं तथापि सूरज की उपस्थिति में वे चमकते नहीं, दिखाई नहीं देते। पर जब सूरज डूब जाता है, तो वे दिखाई देने लगते हैं। जगत का ध्यान भी तभी उनकी ओर जाता है। पर क्या वे तारे सूरज-सा प्रकाश दे पाते हैं ? नहीं, कदापि नहीं।

यद्यपि यह बात पूर्णत: सत्य है कि वे सूरज-सा आलोक नहीं बिखेर पाते तथापि यह भी सत्य है कि घना अंधकार भी नहीं होने देते। वे भी कुछ न कुछ आभा बिखेरते ही हैं। उनके प्रकाश में मात्र मार्ग देखे जा सकते हैं, गलियाँ देखी जा सकती हैं, पढ़ा नहीं जा सकता, पढ़ने के लिए दीपक जलाने पड़ते हैं। पर जगत का काम रुकता नहीं, कुछ काम तारों के प्रकाश में होता है, कुछ काम दीपकों के प्रकाश में होता है। काम चलता ही रहता है।

हमारा भी कर्तव्य है कि काम रुकने न दें, चालू रखें।

सूरज डूब गया। डूब गया सो डूब ही गया। अब क्या किया जा सकता है ? सूरज का उगाना तो तत्काल संभव नहीं है। उसके लिये तो कुछ काल प्रतीक्षा ही करनी होगी। क्योंकि सूरज तो जब उगता है, स्वयं उगता है, उगाने से नहीं उगता। पर प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ रखकर तो नहीं बैठा जा सकता। हमें चमकते तारों की प्रभा से मार्गदर्शन प्राप्त करना होगा, घर-घर में दीपक जलाने होंगे और पूरी शक्ति से अंधकार का मुकाबला करना होगा। जो ज्योति गुरुदेवश्री ने जलाई है, उसे जलाये रखना होगा।

जब हमारे घर में किसी बुजुर्ग का देहावसान हो जाता है, तो घरवाले रोते हैं, बिलखते हैं; आगंतुक आते हैं और समझाते हैं, समझाकर चले जाते हैं। घर का काम घरवालों को ही संभालना पड़ता है, समझानेवाले नहीं संभालते। काम समझनेवालों को संभालना होगा, समझानेवालों को नहीं। समझानेवाले तो समझाकर चले जावेंगे पर... ।

गुरुदेवश्री का अवसान किसी एक घर के बुजुर्ग का अवसान नहीं है। वे हम सभी के धर्मपिता थे। उनका अवसान हम सब के धर्मपिता का अवसान है, इस बात का अनुभव हम सबको करना होगा। कहीं ऐसा न हो जाए कि आप समझानेवाले बन जायें और समझाकर चलते बनें। हम सब उनके उत्तराधिकारी हैं, अत: उनके वारसे को संभालने का उत्तरदायित्व भी सभी का है। पर भाई ! उत्तरदायित्व किसका ? जो समझे, अनुभव करे उसका; जो अनुभव ही न करे, उसको क्या कहें ?

यह समय दूसरों को उपदेश देने का नहीं, आरोप-प्रत्यारोप लगाने का भी नहीं, मिलजुलकर काम करने का है। यह समय चुनौती का समय है, जिसे हमें और आपको मिलकर स्वीकार करना है।

आओ, हम सब मिलकर संकल्प करें, सन्नद्ध हों और एक मन से—एक मत से जुट

जायें तथा बता दें कि गुरुदेवश्री का अवसान नहीं हुआ है। वे अपने अनुयायियों के रूप में, वाणी के रूप में, आज भी विद्यमान हैं और उनके द्वारा आरंभ किया गया मिशन उसी जोरशोर के साथ चल रहा है, बढ़ रहा है, बढ़े चला जा रहा है।

**इस अंक के संबंध में—**

आत्मधर्म कार्यालय में पूज्य गुरुदेवश्री के निधन पर प्राप्त श्रद्धांजलियों, संस्मरणों, लेखों आदि का ताँता लग गया है। तत्संबंधित सामग्री के गत अंक में भी १६-१७ पेज दिये गए हैं, यह अंक तो संपूर्णत: उन्हीं को समर्पित है; शेष सामग्री अगले अंक में प्रकाशित की जावेगी। अगला अंक भी संपूर्णत: इसी सामग्री से संपन्न होगा।

वैसे तो इस संपूर्ण सामग्री को एक विशेषांक के रूप में प्रकाशन करने का विचार था, किंतु सामग्री क्रमश: धीरे-धीरे प्राप्त हो रही थी, तथा इसप्रकार के पत्र भी आ रहे थे कि 'मैं ८-१० दिन में लेख संस्मरण आदि भेजूँगा।' उनकी प्रतीक्षा में अंक को लेट करना उचित नहीं लगा। प्राप्त सामग्री शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित होकर लोगों के हाथ में पहुँचे—इस भावना से यही उचित लगा कि सामग्री ज्यों-ज्यों प्राप्त होती जावे उसे नियमित अंकों के रूप में निरंतर प्रकाशित करते जाना चाहिये। इससे पत्र की नियमितता भी भंग न होगी और सामग्री भी समय पर लोगों के हाथ में पहुँचती रहेगी और पत्र पर व्यवस्था आदि का अतिरिक्त भार भी न पड़ेगा।

इसप्रकार 'श्रद्धांजलि अंक' के पूर्वार्द्ध के रूप में यह अंक प्रस्तुत है। उत्तरार्द्ध के रूप में अगला अंक आपकी सेवा में शीघ्र पहुँचेगा; जिसमें पंडित फूलचंदजी सिद्धांतशास्त्री, पंडित जगन्मोहनलालजी शास्त्री, स०सि० धन्यकुमारजी कटनी, श्री भगतरामजी जैन दिल्ली, डॉ० देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री नीमच, डॉ० दामोदरजी शास्त्री नई दिल्ली, पंडित उत्तमचंदजी सिवनी, ब्रह्मचारी हेमचंदजी भोपाल, श्री अक्षयकुमारजी दिल्ली, आदि विशिष्ट व्यक्तियों के लेख व संस्मरण प्रकाशित किये जावेंगे।

ध्यान रहे, आगामी अंक में १० जनवरी तक प्राप्त सामग्री का ही उपयोग संभव हो सकेगा।

---

**गाँव-गाँव में वीतराग-विज्ञान पाठशालाएँ खोलिये।**

---

# जीवंत समयसार

**पंडित बाबूभाई चुन्नीलाल मेहता**
अध्यक्ष,
श्री कुन्दकुन्द कहान दि० जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट
**फतेपुर ( गुजरात )**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के देहावसान से संपूर्ण देश शोक-संतप्त है, सचमुच में उनके निधन से सम्यक्त्व का सूर्य अस्त हो गया है, अध्यात्म-जगत में भूकंप हो गया है।

वे विश्व की आध्यात्मिक विभूति, बालब्रह्मचारी, आत्मार्थी सत्पुरुष, आध्यात्मिक संत, अविरत सम्यग्दृष्टि, सकल निरावरण परम पारिणामिकभावस्वरूप निज परमात्मद्रव्य के अनन्य उपासक, ज्ञायकस्वभाव की धुन के धनी, अंतर्बाह्य व्यक्तित्व के धनी, जिनवाणी के सातिशय प्रवक्ता एवं निर्ग्रंथ दिगम्बर मार्ग के प्रबल प्रचारक थे। मैं उन्हें कोटि-कोटि वंदन करता हूँ।

स्वामीजी ने इस निकृष्ट पंचम काल में हम सबको परमोत्कृष्ट निज शुद्धात्मतत्त्व बताया है। उन्होंने जिनागम के अंतस्तल में डुबकियाँ लगाकर अनेकांत, स्याद्वाद, निश्चयव्यवहार, निमित्त-उपादान, क्रमबद्धपर्याय, आदि अनेक रत्न निकालकर हमें दिये हैं। उनकी वाणी में द्रव्य-गुण-पर्याय की स्वतंत्रता का सिंहनाद हुआ है। उन्होंने तत्त्व-प्रचार के सशक्त माध्यम के रूप में शिक्षण तथा प्रशिक्षण शिविर-प्रणाली का आविष्कार किया। मोक्षमार्ग का सफल नेतृत्व करनेवाले इस युगपुरुष को मैं अगणित वंदन करता हूँ।

पूज्य गुरुदेवश्री ने हमें आत्मा के अस्तित्व का भान कराया है। सम्यग्दर्शन मोक्षमार्ग की प्रथम सीढ़ी है, उसके बिना धर्म नहीं होता, शुभाशुभभाव में धर्म नहीं है, प्रत्येक आत्मा द्रव्यस्वभाव से भगवान है, तथा स्वयं पुरुषार्थ करके पर्याय में भगवान बन सकता है-इत्यादि अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन करके उन्होंने हम पर अनंत उपकार किए हैं।

सभी जीव अष्ट कर्मों का अभाव करके परमात्मा बनें, कोई भी जीव पामर या अल्पज्ञ न रहे-ऐसी अनन्त करुणा उनके हृदय में निरंतर विद्यमान रहती थी।

वास्तव में पूज्य गुरुदेवश्री जीवंत समयसार हैं। भौतिकरूप से अनुपस्थित होते हुए भी समयसार के अध्ययन-मनन-चिंतन व अनुभव के रूप में वे सदा जीवंत ही रहेंगे। उनके बताए हुए मार्ग पर चलकर हम सब अतीन्द्रिय सुख प्राप्त करें—यही भावना व्यक्त करता हुआ उनके चरणों में विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

# इस युग के आध्यात्मिक युगपुरुष

**श्री सेठ लालचंद हीराचंद**
अध्यक्ष, भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
**बम्बई**

पूज्यश्री कानजीस्वामी ने पिछले ४० वर्षों से दिगम्बर जैन समाज में अध्यात्म के बारे में एक परम सत्य का उद्‌घाटन किया है। पहले हम लोग धर्म के बारे में अपने बुजुर्गों से कुछ मंत्र, श्लोक या प्रार्थना सीख लेते थे और पूजापाठ तथा यात्रा आदि करने से अपना धार्मिक कर्तव्य पूरा हुआ—ऐसा समझते थे। स्वामीजी ने प्राचीन शास्त्रों का गूढ़ अभ्यास किया और हमारे पूज्य आचार्यों के शास्त्र-मर्म को ऐसे हमारे सामने पेश किया कि जिससे आबाल-गोपाल सबको यह बात जानने की, समझने की तथा उसे अपने जीवन में उतारने की उत्कंठा बढ़ी। आत्मा की समझ तथा अपने आत्मा में स्थिर होने का उनका उपदेश पूर्णतया शास्त्रानुसार रहा तथा ज्ञान कोई क्रियाधर्म नहीं है-ऐसा उन्होंने सबको समझाने का विशेष प्रयत्न किया है।

पूज्य स्वामीजी न केवल अध्यात्म प्रवर्तक रहे, बल्कि उनके उपदेश से भारत के हरेक कोने का मुमुक्षु अपने साथियों के नजदीक आया और जैनियों में ऐक्य तथा सहकार की भावना प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से साकार हो सकी। उनके उपदेश से प्रभावित होकर करीब ७०-७५ जिनमंदिर नवनिर्माण हुए तथा उनकी दो तीर्थ-यात्राओं से तीर्थक्षेत्रों की उन्नति में भी महत्त्वपूर्ण योगदान मिला। दिगम्बर सत्‌शास्त्रों की ३० लाख से भी अधिक प्रतियाँ अलग-अलग भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं तथा घर-घर में जिनवाणी ने महत्त्वपूर्ण स्थान पाया है, यह उनकी ही देन है। भारत के जैनों के साथ ससंघ पधारकर अफ्रीका में भी जो धर्म की प्रभावना उन से हुई, वह एक ऐतिहासिक कार्य रहा। उनके उपदेश से प्रभावित होकर तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट तथा अन्य कई संस्थाओं का जन्म हुआ है। मैं तो समझता हूँ कि स्वामीजी इस युग के आध्यात्मिक युगपुरुष थे!

वे हमारे साथ सदेह रूप में नहीं हैं, तो भी शास्त्रों के मर्म का खुलासा अपने पैंतालीस वर्षीय उपदेश से उन्होंने दिया है। हम सब आज अपने जीवन में सम्यग्दर्शन-ज्ञान तथा चारित्र की ज्योति प्रगटाने का संकल्प करके उन्हें भक्तिपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं!

मैं अपनी ओर से, श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से तथा बृहद्‌बंबई दिगम्बर जैन समाज की ओर से पूज्यश्री कानजीस्वामी के प्रति अपनी अहोभाव श्रद्धांजलि अर्पण करता हूँ।

## जैन समाज के आध्यात्मिक स्तंभ

**श्री साहू श्रेयांसप्रसादजी जैन**
अध्यक्ष, दिगम्बर जैन महासमिति
**बम्बई**

दिगम्बर जैनधर्म के महान् प्रचारक पूज्य गुरुदेव इस संसार में अब नहीं रहे। यह शाश्वत नियम है कि जो मनुष्य जन्म लेता है, उसका निधन भी अवश्यंभावी है। यह शाश्वत् सत्य है कि यदि दुनिया में कोई चीज़ निश्चित है, वह है मृत्यु। परंतु मृत्यु के उपरांत कुछ महानुभाव जीवित रहते हैं, जिनके गुणों के कारण उन्हें स्मरण किया जाता है, और उनके बताये हुए मार्ग पर हम चलते हैं ताकि समाज व धर्म को सदा अक्षुण्ण बनाया जा सके।

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी महाराज जैन समाज के एक आध्यात्मिक स्तंभ थे। उन्होंने अपने व्याख्यान द्वारा जिनवाणी के निश्चयनय का प्रचार-प्रसार किया, जो बहुत ही प्रभावशाली रहा। गुरुदेव का हँसता हुआ चेहरा, एवं कथन की अलौकिक शैली ऐसी अनूठी व मनोभावी थी कि कोई भी सहजरूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता था। वस्तुतः गुरुदेव इस युग के सत्यरूप में संत थे, जो सदैव हमें याद आते रहेंगे। ऐसे महान संत के प्रति मैं अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ!

## हम नतमस्तक हैं

पूज्य कानजीस्वामीजी के दर्शन करने का व उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का मुझे सौभाग्य मिला और मैंने पाया कि दिगम्बर जैन समाज के आत्मोत्थान व दिगम्बर जैन तीर्थों की रक्षा के लिए उनके मन में तीव्र उत्कंठा थी। अनेकों श्वेताम्बर बंधु उनके संसर्ग में आकर दिगम्बर मत के अनुयायी बने, यह एक बहुत बड़ा कार्य था। समयसार की चर्चा आज घर-घर होती है, यह स्वामीजी की ही देन है। यह उन्हीं की कृपा है कि देश में उच्चकोटि के विद्वान् इस समय स्थान-स्थान पर जाकर जिनवाणी का डंका बजा रहे हैं। स्वामीजी का यह असमय वियोग दिगम्बर जैन समाज को बड़ा धक्का है। हम सभी स्वामीजी द्वारा किये गए कार्यों के प्रति नतमस्तक हैं।

— **श्री सुकुमारचंदजी जैन, महामंत्री, दिगम्बर जैन महासमिति,** मेरठ (उ०प्र०)

## महान क्रांतिकारी प्रवक्ता

विश्व के हितोपदेशी महान् क्रांतिकारी प्रवक्ता अध्यात्मज्ञानी पुण्यात्मा श्री कानजीस्वामीजी के वियोग से सारे विश्व को असहनीय वेदना हो रही है, हम उनका उपकार कैसे भूल सकते हैं?

एक ऐसे अध्यात्म ज्योति संत को मेरा अनंत प्रणाम!!

— **श्री एस.डी. नागेन्द्र शास्त्री,** हसन (कर्नाटक)

## सदा सावधान रहना है

पंडित फूलचंदजी सिद्धांताचार्य
वाराणसी ( उ०प्र० )

पूज्य स्वामीजी के वियोग से मन खिन्न है। खिन्नता भासित होने लगी है। दीपक के निजाने (बुझ जाने) पर कमरे की जो अवस्था होती है या हृदय की गति रुकने पर व्यक्ति के जीवन पर जो गुजरती है, ठीक वही दशा पूज्य कानजीस्वामी के वियोग पर हम सब मुमुक्षुजनों की हो रही है। अब इस पर्याय में हम उनके मुख से कभी भी अध्यात्म-रस का पान नहीं कर सकेंगे। फिर भी वे अपने पीछे जो सांस्कृतिक धरोहर छोड़ गये हैं, उसे यदि हम सब मुमुक्षुजन मिल-जुलकर सम्हाल सकें तो यह उनके प्रति सबसे बड़ी श्रद्धांजलि होगी। मूलसंघ कुन्दकुन्द आम्नाय लौकिकता से परे मूल सनातन परंपरा है, उसकी हम सबको पूरी शक्ति लगाकर सम्हाल करनी है। उसमें कोई नई अड़चन न आने पाये, इसके लिए सदा सावधान रहना है।

## अपूरणीय क्षति

श्री अध्यात्मवेत्ता कानजीस्वामी ने समयसार के माध्यम से दिगम्बर जैन स्वाध्यायार्थियों के लिये जिस दृष्टि का विगत दशकत्रय में प्रचार व प्रसार किया वह उल्लेखनीय है। आपके मार्गदर्शन में अनेक दिगम्बर जैन जिनालयों एवं अनुयायियों का निर्माण एवं विचार-परिवर्तन हुआ है। आपका अपूर्व व्यक्तित्व रहा और आपकी धर्मप्रभावना-प्रणाली अपूर्व ही रही। आपका दिवंगत होना दिगम्बर जैन समाज की अपूरणीय क्षति है। मैं आपके रत्नत्रयधारी होकर शांति लाभ होने की मंगलकामना करता हूँ। — **सर सेठ भागचंदजी सोनी,** अजमेर (राजस्थान)

## परमोपकारी सद्गुरुदेव

परमोपकारी सद्गुरुदेव, आध्यात्मिक जगत के सूर्य, जैनसिद्धांत के मर्मज्ञ, पूज्य श्री कानजीस्वामी का दिनांक २८-११-१९८० को आकस्मिक निधन ज्ञातकर हम समस्त सेठिया परिवार में गहन शोक छा गया।

प्रभु से विनम्र प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा का यह अमर जीवन अमर रहे एवं शोक-संतप्त धर्मबंधुओं को धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करे। **श्री शुभकरनजी सेठिया,** सरदारशहर (राजस्थान)

**फरवरी सन् १९८१ में होनेवाली जनगणना में धर्म के कालम में जैन लिखावें।**

# वे देह में रहकर भी 'विदेह' थे

डॉ० सागरमलजी जैन
निदेशक
पार्श्वनाथ विद्याश्रम जैन शोध-संस्थान
वाराणसी ( उ०प्र० )

निश्चय ही कानजीस्वामी आचार्य कुन्दकुन्द, आचार्य अमृतचंद्र, कविवर बनारसीदासजी एवं पंडित टोडरमलजी की परंपरा को आगे बढ़ानेवाले तथा निश्चयनयप्रधान अध्यात्म के प्रखर प्रवक्ता एवं पुरस्कर्ता थे। जैन समाज की दार्शनिक चेतना को जागृत करने में उनका योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। जैनधर्म में ज्ञानमार्गीय परंपरा को पुनर्जीवित करने एवं जन-जन में उसे प्रसारित करने के उनके प्रयत्न श्लाघनीय हैं। उनके निधन से जैनधर्म की विद्वत्-परंपरा में एक अपूरणीय क्षति हुई है, यद्यपि उनके द्वारा व्याख्यायित साहित्य युग-युग तक विद्वत्-वर्ग को चिंतन की प्रेरणायें देता रहेगा।

स्वामीजी के देहपात से निश्चय ही ज्ञानधारा का एक प्रवर्तक एवं पथ-प्रदर्शक आज हमारे बीच से उठ गया है, किंतु जो देह थी वह 'पर' थी, उसका निर्जरित होना तो स्वाभाविक एवं अपरिहार्य था। जो देह में रहकर 'विदेह' था, उस आत्मा के लिये तो यह घटना भी एक महोत्सव ही थी। उस साक्षी चेतना ने देखा—एक आवरण टूटा, एक पर्याय छूटी, कर्मों की एक परत निर्जरित हुई। 'क्रमबद्ध पर्यायों के इस प्रवाह में जिसे और जब विस्मृत न घटित होना है, वह होगा; साक्षी चेतना उसे घटित होता देखकर अपने आत्मानंद को विस्मृत न करे' यही स्वामीजी के संपूर्ण जीवन की शिक्षाओं का सार है। इस अवसर पर सभी को उनकी इस शिक्षा को विस्मृत न करते हुए स्व-स्वभावरूप निराकुल दशा में स्थित रहना है। देहातीत आत्मसत्ता के प्रति वंदन!

देह छतां जेहनी दशा, वर्ते देहातीत।
ते ज्ञानी नां चरण मां, वंदन हो अनगणित॥

# युगपुरुष स्वामीजी

**पंडित कैलाशचंद्रजी सिद्धांताचार्य**
संपादक, जैन संदेश
**वाराणसी ( उ०प्र० )**

श्री कानजीस्वामी युगपुरुष थे। इस बीसवीं शताब्दी के युग को उन्होंने समयसारमय बना दिया। जिस समयसार का नाम भी बहुतों ने नहीं सुना था, उस समयसार की गूंज सर्वत्र सुनाई देने लगी। आज स्थिति यह है कि सर्वत्र शास्त्र-प्रवचन की गद्दी पर समयसार विराजमान मिलता है और श्रोता अध्यात्म को सुनना चाहते हैं। जो कभी कहते थे कि समयसार गृहस्थों के लिये नहीं है, आज उन्हीं में समयसार के लिये शिविर लगाये जाते हैं। यह सब स्वामीजी की वाणी का चमत्कार है।

उनकी सौम्य मुद्रा आँखों के सामने निरंतर घूमती है। प्रवचन करते समय उनके मुख पर जो सौम्यता रहती थी, वह भुलाये नहीं भूलती। खेद यही है कि अब उस प्रशांत छवि के साक्षात् दर्शन का सौभाग्य प्राप्त नहीं होगा।

जैनदर्शन अनेकांतरूप है और उस अनेकांतरूप के दर्शन उनके जीवन-व्यवहार में होते थे। वे निश्चयनय के प्रवक्ता थे। शुभोपयोग और उससे होनेवाले पुण्यबंध पर तीव्र प्रहार करते थे। इसी कारण उनका विरोध भी होता था। किंतु व्यवहारी भी पक्के थे। उसी का तो यह फल है कि आज सौराष्ट्र दिगम्बर जैन मंदिरों और मूर्तियों से सुशोभित है। ऐसे सुंदर जिनालय और जिनबिम्ब सुदुर्लभ हैं। इतनी पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएँ किसी दिगम्बर जैन ने और वह भी अध्यात्म के प्रवक्ता और मूर्ति पूजा विरोधी संप्रदाय में जन्म लेनेवाले ने कराई हों, इसका दूसरा उदाहरण नहीं है।

स्वामीजी ने पुण्य-संचय के ही सत्कार्य अपने जीवन में किये। वे बाल-ब्रह्मचारी थे। मुखपट्टी छोड़ने के बाद भी उन्होंने अपने बाह्य वेष को नहीं बदला। परिणति एक विरक्त की ही रही। इतना धार्मिक नवनिर्माण कराकर भी स्वयं उससे अछूते रहे। वे किसी प्रकार के आरंभ के प्रपंच में नहीं पड़े। यद्यपि उन्होंने विधिपूर्वक व्रत धारण नहीं किये, किंतु उनका जीवन एक व्रती जैसा रहा।

उनके विरोधी उन्हें आज भी श्वेताम्बर ही मानते हैं, जबकि मेरी दृष्टि में वे कट्टर दिगम्बर जैन थे।

मुझे उनकी दो घटनाएँ स्मृत हैं। स्वामीजी संघ के साथ वाराणसी आये हुए थे। मैं उन्हें दर्शनार्थ भेलुपुरा के उस मंदिर में ले गया जिसमें श्वेताम्बर मूर्तियों के साथ नीचे एक कोने में कुछ दिगम्बर मूर्तियाँ भी हैं। सब चिल्लाने लगे—'श्वेताम्बर मंदिर छे' पंडितजी कहाँ लिवा लाये। जब

उनकी दृष्टि कोने में विराजमान दिगम्बर मूर्तियों पर पड़ी तब बोले—सरागी ऊपर बैठा है, वीतरागी नीचे है आदि। तब मैंने उन्हें सब स्थिति बतलाई।

दूसरे दिन स्वामीजी स्याद्वाद विद्यालय के वार्षिकोत्सव में पधारे। तख्त पर उनके पास श्वेताम्बर यति हीरानंदजी भी बैठे थे। उन्होंने स्वामीजी से अपने यहाँ पधारने का अनुरोध किया। स्वामीजी चुप रहे। पुनः अनुरोध किया तो स्वामीजी बोले—आपके मंदिर होंगे। मैं तो वहाँ नमस्कार करूँगा नहीं, आपको कष्ट होगा। यतिजी बोले—आप तो अध्यात्म संत हैं, आपके लिये सब एक हैं। स्वामीजी बोले—ऐसा नहीं है। मैं उनका इतना स्पष्ट उत्तर सुनकर स्तब्ध रह गया। ऐसे थे स्वामीजी।

जिस दिगम्बर समाज ने उनका विरोध किया, उनका बहिष्कार तक कराया गया, उसे ही वे अपनाये रहे और कभी कुछ नहीं कहा। सन् ४० से ८० तक के चार दशक उनके जीवन से अनुप्राणित हैं। उन्होंने अध्यात्म की जो ज्योति प्रज्वलित की है, वह प्रज्वलित रहे—ऐसा ही प्रयत्न होना चाहिये। निश्चय और व्यवहार के संबंध में ही व्यक्ति और समाज का हित है।

इतने शब्दों के साथ मैं उस युगपुरुष को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

---

## अमृत वर्षा के लिये लोग लालायित रहेंगे

**श्री अनूपचंदजी न्यायतीर्थ**
**जयपुर**

सोनगढ़ के संत पूज्य श्री कानजीस्वामी के निधन से आध्यात्मिक जगत में एक धक्का-सा महसूस किया गया है। सच्चिदानंद आनंदघन प्रभो आत्मा के दिग्दर्शन कराने हेतु उनका सतत चिंतन एवं मनन चलता रहता था। उनके प्रवचन से हजारों मुमुक्षुओं ने आत्मलाभ लिया, किंतु अब उस अमृत वर्षा के लिये लोग लालायित रहेंगे। उनके अभाव से उत्पन्न क्षति की पूर्ति आत्मार्थियों के लिये कब और कैसे होगी, कहा नहीं जा सकता। उनने दिगम्बर जैनधर्म के प्रचार एवं प्रसार में—लाखों की संख्या में नये जैन बनाकर तथा अनेक प्रतिष्ठाएँ कराकर, नवीन मंदिर निर्माण द्वारा जो सहयोग दिया है वह चिरस्मरणीय है। समयसार तथा प्रवचनसार एवं मोक्षमार्गप्रकाशक के प्रवचनों से जो आध्यात्मिक लहर स्वामीजी ने समाज में फैलायी वह कभी हटाई नहीं जा सकती। आज के युग में शुद्धाम्नाय एवं शिथिलाचार विरोधी प्रवृत्ति का संपूर्ण श्रेय स्वामीजी को ही है। विदेशों में जैनधर्म के प्रचार-कार्य का जो उदाहरण स्वामीजी ने रखा है, अनुकरणीय है।

उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यह ही है कि हम उनके द्वारा बताये मार्ग पर चलें और दूसरों को प्रेरणा दें।

# अध्यात्म का सूर्य अस्तंगत

**पंडित प्रकाशचंदजी 'हितैषी**
संपादक, सन्मति संदेश
**नई दिल्ली**

श्रद्धेय सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी समयसार की तत्त्वकथनी से प्रभावित होकर अपने कुलधर्म को छोड़कर दिगम्बर धर्म से दीक्षित हुए थे। उन्हें अध्यात्म और तत्त्व से इतनी अधिक रुचि थी कि उनका जीवन ही अध्यात्म और समयसारमय हो गया था। लौकिक चर्चा या लौकिक कार्यों में उनकी रुचि रंचमात्र भी नहीं थी। निरंतर तत्त्व का अध्ययन-मनन करना तथा देशना में भी आत्मस्पर्शी तत्त्व-प्ररूपणा की वर्षा करना उनका दैनिक कार्यक्रम था। सोनगढ़ तो अध्यात्म का नंदनवन बन गया है। प्रत्येक कल्याणार्थी मानव उनकी देशना सुनकर अभिभूत हुए बिना नहीं रहता था।

उनकी मंगलमय वाणी ने भारत और भारत के बाहर विदेशों में अगणित तत्त्वप्रेमी उत्पन्न कर दिये हैं।

तत्त्वज्ञता का परिचय उनके जीवन में भी मिलता है। परंपरा और व्यवहार की दुहाई देनेवालों ने सभी स्तरों पर आकर विरोध किया, किंतु उन्हें कभी क्रोध या खेद करते हुए नहीं देखा गया। अपने विरोधी के प्रति भी उनमें अपार करुणा प्रवाहित होती रहती थी। विरोध के भयंकर उत्पात और तूफान में भी उनके मुख से यही शब्द निकलते थे—'भाई! वह भी कारण-परमात्मा है। पर्याय में भूल है, जो कभी हम सबमें भी अनादिकाल से रही है। भूला हुआ प्राणी तो क्षमा का पात्र होता है।' संत का यही समता भाव सर्वश्रेष्ठ लक्षण है। जिसमें इसीप्रकार की समता हो वही संत है। यह परिभाषा आप में पूर्ण तरह घटित होती है।

आपके आध्यात्मिक वाणी में जादू जैसा प्रभाव था। जो भी मध्यस्थ होकर जिज्ञासा भाव से आपका प्रवचन सुनता, वही अध्यात्म का अनन्य प्रेमी बन जाता था। इसप्रकार भारत के प्रत्येक नगर-ग्राम में अगणित अध्यात्मप्रेमी तैयार हो गये हैं—जो तत्त्व-निर्णय करके अपना कल्याणमार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। आज चाहे तत्त्व-निर्णय के लिए हो, चाहे उसका विरोध करने के लिए हो, घर-घर निश्चय-व्यवहार, समयसार, निमित्त-उपादान आदि की चर्चा चलती है। कुछ समय पहले जैन समाज में से स्वाध्याय की प्रवृत्ति समाप्त प्रायः हो चुकी थी, अब प्रत्येक स्थान पर गहरी तत्त्वचर्चा के साथ स्वाध्याय-गोष्ठियाँ होती हैं। जो युवक कभी मंदिर भी नहीं जाते थे, वे आज भक्तिपूर्वक दर्शन-पूजन करते हैं। आपकी अध्यात्मवाणी से सिर्फ गृहस्थ ही नहीं, आचार्य-मुनिराज, क्षुल्लक-ऐलक

एवं अनेक त्यागी-व्रती भी प्रभावित हुए हैं—क्योंकि वे कुछ कहते थे, वह सब आगम आधार से प्रमाणित है। यही कारण है कि दिगम्बर जैन समाज के अनेक अग्रगण्य विद्वान भी उनकी वाणी का समर्थन करते हैं।

उन्होंने न तो स्वयं किसी ग्रंथ की टीका की है, और न किसी ग्रंथ की रचना की है। जितना भी वे प्रवचन करते थे, वह आचार्यों और प्राचीन टीकाकारों के आधार से बोलते थे। इसीलिए उनके वचन प्रमाणित हुए हैं। जिनवाणी से बाहर वे एक वचन भी नहीं बोलते थे। वे जो कहते थे, उसका आधार भी देते जाते थे, इसीलिए उनकी बात सभी के गले उतर जाती थी। तत्त्व की बात व्यवहार-कथन से कुछ विलक्षण अवश्य होती है। अत: जो दोनों नयों को नहीं जानते हैं, उन्हें कुछ विरोध-सा लगता है; किंतु जो आगमाभ्यासी हैं, उनकी समझ में शीघ्र ही समा जाता है।

इनसे पूर्व अध्यात्म-ग्रंथ यदि एक हजार छप जाते तो १०-२० वर्ष में भी नहीं बिकते थे। आज उनके प्रभाव से लाखों ग्रंथ प्रकाशित होकर घर-घर पहुँच रहे हैं।

उन्होंने वह आध्यात्मिक क्रांति का शंखनाद फूँका था, जिसने जैन समाज में अध्यात्म के प्रति अपूर्व लगन पैदा कर दी है। यद्यपि आज वह अध्यात्म का चमकता सूर्य अस्तंगत हो गया है, किंतु हम सबको एक प्रकाश की किरण वितरण कर गया है, जो हमें सत्यमार्ग को दिखाती रहेगी। उनका जैन समाज पर अपूर्व उपकार है, अत: मैं भी, अपनी श्रद्धा के शत्-शत् सुमन उन्हें समर्पित करता हूँ।

---

## महान प्रचारक खोया

**डॉ० पन्नालालजी साहित्याचार्य**
मंत्री, श्री भा० दि० जैन विद्वतपरिषद्
**सागर ( म० प्र० )**

श्री कानजीस्वामी के अंतरंग की प्रेरणा से निष्ठापूर्वक दिगम्बर जैनधर्म स्वीकृत किया और अपने सदुपदेश से हजारों श्वेताम्बर जैनों को दिगम्बर धर्म में दीक्षित किया—यह पूर्व इतिहास में अश्रुतपूर्व घटना है। अध्यात्म-ग्रंथों के स्वाध्याय की क्षीणप्राय धारा को पुन: प्रवाहित करना, स्थान-स्थान पर स्वाध्याय मंडलों की स्थापना होना और उनके माध्यम से आत्मतत्त्व की ओर जनमानस को आकृष्ट करना यह अपने आप में महान कार्य हैं। विरोधियों के विरोध की परवाह न कर लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना यह साधक की अनूठी विशेषता है।

कानजीस्वामी के देहावसान से दिगम्बर जैन समाज ने दिगम्बर धर्म का एक महान

प्रचारक खोया है। दिगम्बर धर्म के प्रति उनकी निष्ठा अविस्मरणीय है। मैं उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

## एकमात्र आत्मा की बात करनेवाले संत

**डॉ० देवेन्द्रकुमारजी जैन**
प्रोफेसर, इंदौर विश्वविद्यालय
**इंदौर ( म०प्र० )**

पूज्य कानजीस्वामी का निधन विशेष दुखद इस अर्थ में है कि एकमात्र आत्मा की बात कहने और करनेवाला संत अब हमारी दुनिया से उठ गया। उनका निधन नियति का अटल नियम है जिसे कौन टाल सकता था ? दुनिया में अधिकतर वे लोग हैं जो जीने-करने में ही अपनी सार्थकता मानते हैं, लेकिन कुछ लोग ऐसे भी (बहुत कम) होते हैं, जिन्हें दुनिया चाहती है और इतना चाहती है कि वे खूब जिएँ और जीते रहें ताकि उनके अनुभवों से अथांत विषम और पर-पीड़न में लगी दुनिया में संतुलना बना रहे। कानजीस्वामी ऐसे ही महापुरुषों में से एक थे, जो सदियों में उत्पन्न होते हैं।

भारत में सहज साधना का इतिहास पुराना है, परंतु कानजीस्वामी की साधना इतनी सहज थी कि वह सब प्रकार की रूढ़ियों से मुक्त थी। रूढ़ियों और मर्यादाओं का विरोध करने के बजाया वे आत्मविवेक से प्रेरित आचरण पर जोर देते थे। वे इतने सहज थे कि उनकी सहजता विवाद का विषय बन गई, परंतु इसे सहन करना भी उन्होंने जीवन का सहज धर्म माना।

वे जिस युग में उत्पन्न हुए, रहे और जिससे विदा हुए—वह युग भौतिक गतिविधियों, हिंसक बर्बरताओं और क्रूर उत्पीड़न का युग था, तब भी वे आत्मा की बात पर दृढ़ रहे।

शास्त्रीय जड़ताओं और भौतिक चकाचौंध से भ्रांत दुनिया को यदि उनकी सहज बात रास नहीं आई—तो इससे वे विचलित नहीं हुए। दुनियावी संकीर्णताओं से वे इतने ऊपर उठ चुके थे कि उनके बारे में यह सोचना—कि वे दिगम्बर थे या श्वेताम्बर, गृहस्थ थे या कुछ और, गलत है। वह आकाश की तरह उन्मुक्त थे, और आकाश यह कभी नहीं सोचता कि लोगों ने अपना आकाश बना लिया है, और अपने बौने आकाश को समूचे आकाश पर थोपना चाहते हैं। वे भीतर-बाहर एक थे। वे विचार और आचरण की एकमात्र कसौटी आत्मा को मानते थे।

उनके प्रवचनों को आप पढ़े या सुनें, आप देखेंगे कि उनकी आत्मगत अनुभूतियाँ उसी तरह मन को छूती हैं, जैसे सूर्य की किरणें। कभी ऐसा भी होता है कि अनुभूति, विचारों के आवर्त में

चक्कर काटती हुई दिखाई देती है और लगता है कि वह डूबी, अब डूबी, परंतु ऐसा नहीं है, वह गहराई में जाकर अनुभव के साक्ष्यमणि लेकर आती है। उससे नया प्रकाश मिलता है। वे आचार्य कुन्दकुन्द की आध्यात्मिक विचारधारा के एकमात्र दृष्टा, साधक और व्याख्याकार थे जो इसी सदी में पैदा हुए—उन्होंने कुन्दकुन्दाचार्य की विचारधारा को अपनी साधना से नया आयाम दिया। वे नहीं हैं—फिर भी उनकी स्मृति और वाणी अमर है जो जन-मन को शांति देती रहेगी।

---

**चक्षुरुन्मीलितं येन,**
**तस्मै श्री गुरवे नमः**

**श्री त्रिलोकचंदजी जैन**
भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री, राजस्थान
**जयपुर**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के स्वर्गारोहण के समाचार सुनकर आघात लगा। उनकी आत्मा नश्वर शरीर को त्यागकर ज्ञानमय हो गई। वे पिछले दिनों से असाध्य बीमार थे, इसलिए यह आघात प्रत्याशित ही था। फिर भी जिसप्रकार उनके प्रवचनों से आत्मज्ञान की मंगलधारा बह रही थी, वह यकायक अवरुद्ध हो गई।

श्री गुरुदेव एक मेधावी तत्त्वज्ञानी थे। ज्ञानयोग के अनन्य साधक थे। आत्मधर्म के उर्जस्वी तपस्वी एवं प्रखर प्रवक्ता थे। जैनतत्त्वदर्शन के प्रभावी विद्वान एवं व्याख्याता थे। यह उनकी अद्वितीय क्षमता थी कि उन्होंने जैनदर्शन को समझने एवं बोधगम्य शैली में प्रस्तुत करनेवाले सैकड़ों विद्वान् निर्माण किये। वे तत्त्वदर्शन के प्रचार-प्रसार के आयोजन की अद्वितीय प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने आत्मधर्म के प्रचार के लिए वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ के रूप में, एक महान व ज्ञान-यज्ञ प्रारंभ किया, जो सतत् चलता रहेगा; जिसके माध्यम से जैनतत्त्वदर्शन का केतु लहराता रहेगा।

श्री स्वामीजी एक ज्ञानी पुरुष थे। ज्ञान-साधना उनके जीवन में सहज सध गयी थी। खंडन-मंडन, समीक्षाओं, समालोचनाओं से निरपेक्ष रहकर आत्मधर्म के मंगलमय प्रवचनों की जो पुनीत धारा प्रवाहित की, उसमें हजारों व्यक्तियों ने श्रद्धा के साथ अवगाहन किया। क्या किशोर, क्या युवक, क्या प्रौढ़ और क्या वृद्ध, सभी स्त्री-पुरुषों में अपने बोधगम्य प्रवचनों से, आत्मधर्म को समझने के लिये जिज्ञासा जागृत की। अपनी दिव्यज्ञान की ज्योति से हजारों स्त्री-पुरुषों के मानस को आलोकित ही नहीं किया, अपितु आंदोलित भी किया।

उन्होंने परंपराओं से दूर एक विशुद्ध-ज्ञानी का जीवन जिया। उनका जैनतत्त्वदर्शन में अगाध

श्रद्धान था। उनके निधन से एक ऐसा श्रद्धावान मनस्वी उठ गया, जिनकी दृढ़ मान्यता थी कि ''ज्ञानाग्नि सर्व कर्माणि, भस्मसात् कुरुते तथा''।

श्री स्वामीजी जैन संस्कृति की चेतना के प्रतिनिधि मनस्वी थे। ऐसे साहसिक क्रांतदर्शी पुरुष के चरणों में शत्-शत् बार वंदन के साथ अपने हृदय-तल की गहराई से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

''चक्षुरुन्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरुवे नमः''

---

## जो भुलाये नहीं जा सकते

सिद्धांतरत्न सिद्धांतमहोदधि
**पंडित नन्हेलालजी जैन**
न्याय-सिद्धांतशास्त्री
**राजाखेड़ा ( राजस्थान )**

अध्यात्म संत श्री कानजीस्वामी का देहावसान जानकर हार्दिक दुःख हुआ। स्वामीजी ने पूज्य कुन्दकुन्द आचार्य के समयसार, प्रवचनसार आदि आध्यात्मिक ग्रंथों का मर्म जनता को पिलाकर जो कल्याण किया है, वह भुलाया नहीं जा सकता। उक्त ग्रंथों के गूढ़तत्त्वों का प्रचार और प्रसार स्वामीजी की ही देन है। पचास वर्ष पहिले इन महान ग्रंथों के नाम से लोग ठीक-ठीक परिचित भी नहीं थे।

स्वामीजी अपनी स्पष्टवादिता के लिए प्रसिद्ध थे। वस्तुस्वरूप जैसा और जो है, उसके कहने में सदा निर्भीक रहे। आपने कभी भी लोगों के द्वारा किये गये आक्षेपों का उत्तर देने की तरफ ध्यान नहीं दिया जबकि संसारी जन उसीरूप में प्रतिकार कर शांत होते हैं। किंतु स्वामीजी दूरदर्शी थे। अपने द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत पर दृढ़ और स्थिर रहे। कभी किसी का प्रत्युत्तर देना व प्रतिकार करना वे उचित नहीं समझते थे। उन्हें किसी के आक्षेपों से दुःख भी नहीं होता था। अपने स्वभाव या तत्त्वप्रतिपादन में रत रहना ही उनका लक्ष्य था।

उनका यह भी लक्ष्य था कि जैन समाज में मेधावी छात्रों की कमी नहीं है। किंतु उनकी प्रतिभा के विकास के लिये उत्तम विद्यालयों का प्रायः अभाव है—जिसमें अध्ययन करने की समस्त सुविधाऐं हों और छात्र न्याय, सिद्धांत, साहित्य आदि में उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकें—इसकी पूर्ति आपने जयपुर में जैन महाविद्यालय खोलकर की। छात्रों द्वारा ही जैनधर्म का प्रचार और प्रसार संभव हो सकेगा।

स्वामीजी के संपर्क में जो भी विद्वान आया वह पारस पत्थर से स्वर्ण के समान महाविद्वान बन गया। यही कारण है कि श्री बाबूभाई, डॉ० भारिल्ल आदि स्वामीजी के चरण-चिह्नों पर चलकर वैसे ही बन गये।

स्वामीजी अध्यात्म-ग्रंथों के प्रकांड विद्वान थे। प्रमाण, निश्चयनय आदि द्वारा वस्तु का विवेचन कितना गूढ़ और अकाट्य होता था जिसे हृदयंगम कर विद्वान भी गद्‌गद् हो जाते थे। आज वही महान विभूति इस नश्वर संसार से सदा के लिए लुप्त हो गयी है।

मैं उस महान आत्मा के प्रति अपनी हार्दिक शोक-श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

---

## सागर-से गंभीर, चंद्रमा-से शीतल और आकाश-से विशाल

**डॉ० भागचंद्रजी जैन 'भास्कर'**
अध्यक्ष, पालि-प्राकृत विभाग
नागपुर विश्वविद्यालय
**नागपुर ( म०प्र० )**

दिनांक २८ नवम्बर १९८० की शाम, बम्बई का जसलोक अस्पताल, वाणिज्य-नगरी का धुआंधार वैभव, फिर भी प्रकृति का निर्मम क्रूर उपहास। चहचहेती सुनहरी नगरी में एकाएक बिजली का करेण्ट-सा हृदयविदारक समाचार फैला-स्वर्णगढ़ के आध्यात्मिक जगत का सूर्य अस्त! पूज्य कानजीस्वामी का स्वर्गवास! लगभग दो घंटे बाद आकाशवाणी ने इस मायूसी ध्वनि को सारी दुनियाँ में फैला दिया। स्वामीजी के अनन्य भक्त उसे सुनकर अवाक् रह गये, किंकर्त्तव्य विमूढ़-से हो गये।

यह सब स्वाभाविक ही था। पूज्य कानजीस्वामी वस्तुतः आध्यात्मिक आलोक में आलोकित एक असामान्य क्रांतिकारी संत थे, विश्वमानव थे, आत्मनिष्ठ, चिंतनशील व आत्मानुभूति के रस से सिक्त मनीषी तत्त्वज्ञानी थे, परमात्मभूति और समता में रंगे दिव्य इन्द्रधनुषी व्यक्तित्व के धनी थे। उनका जीवन उदात्त आदर्शों का प्रतीक था, ऋजुता को संजोये था, आत्मलोचन और आत्मनिरीक्षण से मंडित था।

समाज को कर्मकांड के घिनोनेरूप से मुक्त करने और गाँव-गाँव में ज्ञानदीप को प्रज्वलितकर आत्मतत्त्व को समझने का जो अपूर्व स्वर्णावसर स्वामीजी ने दिया वह इतिहास में निश्चितरूप से स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। निश्चय-व्यवहारनय की कथनी के माध्यम से उनकी कथन-प्रक्रिया ने घर-घर में समयसार और प्रवचनसार को विराजमान कर दिया, मोक्षमार्गप्रकाशक

की दिव्य किरणें फैला दीं। विशाल-विशाल ग्रंथों को भी अल्पतम कीमत में उनकी ही वाग्विदग्धता ने हाथों-हाथों पहुँचा दिया।

अपने में ही खोये रहनेवाले अल्पभाषी, स्थितप्रज्ञ ऊर्ध्वारोही संत संघर्ष की आग में तपकर निखर और निष्णात हो गये थे। उनकी मंत्रमुग्ध निश्छल वाणी सुनकर हजारों दिग्भ्रमित परिवार तत्त्वचिंतन की ओर उन्मुख हो गये। उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति, ऊर्जा और साहस अनुपम था। गोल, भरे, गौरवर्ण आकर्षक चेहरे में तेजस्विता और मौलिकता प्रतिबिंबित होती थी। अकर्मण्यता और अलसता के तो वे अंत तक भी शिकार नहीं हुए। वे सदैव अप्रमादी बनकर सत्यशोधकता और अन्वेषी-वृत्ति के ही पक्षपाती रहे। समाज ने उनकी पवित्रता और निष्पक्षता का मूल्यांकन किया है, यह संतोष की बात है। जो उसका मूल्यांकन नहीं कर सका उसके हाथ पश्चाताप के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं आया। सागर की गंभीरता, चंद्रमा की शीतलता और आकाश की विशालता लिए संत कानजीस्वामी का आत्मसाधक व्रती जीवन सभी के लिए प्रकाशपुंज बना रहे, यही कामना है।

---

## बीसवीं शताब्दी के आध्यात्मिक महापुरुष

**डॉ० दरबारीलालजी कोठिया**
न्यायाचार्य
उपाध्यक्ष, अ० भा० दि० जैन विद्वत्परिषद्
**वाराणसी ( उ०प्र० )**

अध्यात्म के महोपदेष्टा श्री कानजीस्वामी का २८ नवंबर, १९८० को बम्बई में निधन हो जाने का समाचार ज्ञातकर आश्चर्यचकित हो गया, क्योंकि इससे पूर्व उनकी अस्वस्थता का कोई समाचार अवगत नहीं हुआ था। जैनसमाज ने एक ऐसे अध्यात्मोपदेष्टा को खो दिया, जिसने बीसवीं शताब्दी में आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार को पाकर आत्मधर्म का जैसा मार्गदर्शन किया वह अद्वितीय है। उन्होंने समयसार पर ही नहीं, नियमसार, प्रवचनसार, परमात्मप्रकाश, द्रव्यसंग्रह जैसे आध्यात्मिक ग्रंथों पर सोनगढ़ (सौराष्ट्र) के प्रवचन-मंडप में पिछले ५० वर्षों में अत्यंत बारीकी से दर्जनों बार प्रवचन किये और उन प्रवचनों को लाखों लोगों ने एकचित्त होकर सुना। स्वामीजी ने सोनगढ़ से बाहर भी अनेकों स्थानों पर अध्यात्म की धारा प्रवाहित की, वस्तुतः समाज अध्यात्म से अपरिचित थी, कभी कदाचित् द्यानतरायजी, दौलतरामजी, बनारसीदासजी, भागचन्द्रजी आदि के आध्यात्मिक पदों को ही वचनिका के अंत में बोलकर वह संतोष कर लेती थी।

स्वामीजी से मेरा प्रथम साक्षात्कार अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन वि० परिषद् के सोनगढ़ में हुए अधिवेशन के समय हुआ था। यह अधिवेशन सन् १९४६ में हुआ था। उस समय स्वामीजी का प्रभाव फैल रहा था। विद्वान भी उनसे परिचित होना चाहते थे और वे विद्वानों से। अतएव विद्वत्परिषद् ने सोनगढ़ के आमंत्रण को सहर्ष स्वीकार किया था। उस अधिवेशन में छोटे-बड़े लगभग ६०-७० विद्वान् सम्मिलित हुए थे और तीन दिन वहाँ रहे थे। सभी ने स्वामीजी के प्रवचनों को सुनकर अनुभव किया था कि आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार का स्वामीजी जो प्रचार और प्रसार कर रहे हैं, वह स्तुत्य है। विद्वत्परिषद् ने एक प्रस्ताव द्वारा स्वामीजी के कार्य की संस्तुति भी की थी। तीन दिन का समय सभी विद्वानों का सुखद वातावरण में व्यतीत हुआ था।

एक दिन मैंने स्वामीजी से प्रश्न किया कि 'स्वामीजी, आप समयसार को केवली-कथित कहते हैं-आचार्य कुन्दकुन्द ने विदेह जाकर सीमंधरस्वामी के समवसरण में उपदेश सुनकर समयसार की रचना की थी। परंतु आचार्य कुन्दकुन्द तो स्वयं समयसार को '**सुदकेवलीभणिदं**' अर्थात् श्रुतकेवली भणित कह रहे हैं, फिर आप उसे केवलीभणित कैसे कहते हैं ? स्वामीजी ने बड़े सौम्य और स्थिरभाव से मेरे प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा, कि ''कोठियाजी, श्रुतकेवली का अर्थ 'श्रुतज्ञान द्वारा प्रकाशित और केवली द्वारा कथित' आचार्य अमृतचंद्र ने स्पष्ट बतलाया है। स्वामीजी ने आचार्य अमृतचंद्र की टीका से निम्न उद्धरण तत्काल प्रस्तुत किया— ''**अनादिनिधनश्रुतप्रकाशितत्वेन निखिलार्थसार्थसाक्षात्कारिकेवलिप्रणीतत्वेन श्रुतकेवलिभिः स्वयमनुभवद्भिरभिहितत्वेन च प्रमाणतामुपगतस्यास्य समय-प्रकाशकस्य....।**'' उनके इस सप्रमाण उत्तर से मुझे ही नहीं, अपितु सभी विद्वानों को परम संतोष हुआ। वे जो निरूपण करते थे, साधार करते थे। स्वामीजी से मेरा तभी से परिचय हुआ।

इसके बाद वे सम्मेदशिखरजी की ससंघ यात्रा करने के लिये वाराणसी होते हुए गये, तब भी स्वामीजी से साक्षात्कार हुआ। एक प्रश्न मैंने इस समय भी उनसे किया। उस समय स्वामीजी को जुकाम था और सूँघनी सूँघ रहे थे। मैंने पूछा कि स्वामीजी सूँघनी तो निमित्त है। उसका सहारा आप क्यों लेते हैं ? उन्होंने तुरंत कहा कि ''कोठियाजी, आत्मधर्म के उद्योतन के लिए शरीर और शरीर रक्षा के हेतु भोजन-पान, औषध आदि की गृहस्थ को जरूरत पड़ती है।''

यों उन्होंने अपने आध्यात्मिक प्रवचनों से ६० वर्ष तक जो तत्त्वज्ञान समाज एवं लोक को प्रदान किया, उसके लिए समाज उनकी सदा कृतज्ञ रहेगी। मेरे उन्हें श्रद्धा-सुमन समर्पित हैं।

## अलौकिक प्रतिभासंपन्न संत

**श्री उदयचंद्रजी जैन**
रीडर, जैन-बौद्धदर्शन
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
**वाराणसी ( उ०प्र० )**

आध्यात्मिक संत पूज्य कानजीस्वामी के आकस्मिक स्वर्गवास के समाचार से हार्दिक दु:ख हुआ। स्वामीजी अलौकिक प्रतिभासंपन्न एक अनुपम संत थे, जिन्होंने जैन समाज में एक क्रांति तथा नूतन जागृति उत्पन्न कर दी थी। उनके देहावसान से एक युग का अंत हो गया है। निकट भविष्य में उनके स्थान की पूर्ति असंभव प्रतीत हो रही है।

मुझे अपने जीवन में केवल एक बार ही उनके दर्शन तथा प्रवचन-श्रवण का सौभाग्य मिला है, जब वे सन् १९५७ में सम्मेदशिखर की यात्रा को जाते हुए संघसहित वाराणसी आये थे। वास्तव में उनका व्यक्तित्व अलौकिक था। मेरी इच्छा थी कि कभी सोनगढ़ जाकर और वहाँ कुछ दिन रहकर स्वामीजी के प्रवचनों से लाभ प्राप्त करूँ। किंतु मेरी यह इच्छा अपूर्ण ही रह गयी। अंत में मैं दिवंगत पुनीत आत्मा के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

---

## जैन अध्यात्मवाद के आधुनिकयुगीन सर्वोपरि प्रस्तोता

**डॉ० ज्योतिप्रसादजी जैन**
प्रधान संपादक, वीर
**लखनऊ ( उ०प्र० )**

ईस्वी सन् की यह बीसवीं शताब्दी विश्व इतिहास में युग-युगों पर्यंत स्मरणीय रहेगी। इस शती में जहाँ विज्ञान एवं तज्जन्य भौतिकता की विद्युतवेगी प्रगति देखी, वहाँ दो अति विध्वंसकारी भीषण विश्वयुद्ध और अनेक युगांतरकारी राज्यक्रांतियाँ एवं सामाजिक क्रांतियाँ एवं सामाजिक क्रांतियाँ भी देखीं, जिनके फलस्वरूप जीवन के मूल्य एकदम बदल गये। इसी शताब्दी को अनेक विश्वविभूतियों के साक्ष्य का सुयोग मिला—जीवन के प्राय: प्रत्येक क्षेत्र में अनेक नरपुंगवों ने अपने-अपने ढंग से इतिहास को प्रभावित करने का सफल प्रयास किया।

जैन समाज अपेक्षाकृत एक छोटी समाज है, किंतु इसमें भी जितनी युगांतरकारी महान विभूतियों का सद्भाव इस शती में रहा वैसा शायद अन्य किसी एक शती में नहीं हुआ। इस शताब्दी के आरंभ में एक ओर शास्त्रीयज्ञान की विरलता थी, दूसरी ओर समाज अनेक रूढ़ियों, कुरीतियों

एवं अंधविश्वासों में जकड़ा था। सौभाग्य से दोनों ही क्षेत्रों में दर्जनों प्रबुद्ध समाजचेता नेता सामने आये, जिन्होंने शिक्षाप्रचार, साहित्यसृजन एवं प्रकाशन, धर्मप्रचार, विविध समाजसुधार आदि दिशाओं में अथक एवं बहुत-कुछ सफल उद्यम किया।

इसी शृंखला में सोनगढ़ के अध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी की उपलब्धियाँ अनेक दृष्टियों से विलक्षण एवं चिरस्मरणीय हैं। अध्यात्म जैन परंपरा के लिए कोई आविष्कार नहीं था—वह तो सदैव से उसकी आत्मा में ओत-प्रोत रहा है। इस युग के आरंभ में श्रीमद्राजचंद्र, भट्टारक लक्ष्मीसेन, ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद, पंडित गणेशप्रसाद वर्णी प्रभृति कई समयसार-मर्मज्ञ अध्यात्मरसिया हुए। किंतु स्वर्गीय पूज्य कानजीस्वामी ने उसका जो सफल, सुसंगठित एवं सुनियोजित व्यापक प्रचार-प्रसार किया, वह अप्रतिम है। जैन अध्यात्म की उनकी विचारधारा, विचारसरणि, व्याख्यानशैली, शब्दयोजना, यहाँ तक कि पारिभाषिकता भी अपने में एक अद्वितीय संस्था (इंस्टीट्यूशन) बन गई। स्वामीजी की बेजोड़ लगन, अध्यवसाय, आकर्षक शक्ति और प्रशंसक अनुयायियों का एकनिष्ठ सहयोग तो थे ही, कुछ अद्भुत पुण्योदय भी था। चार दशकों से कुछ कम समय में ही उन्होंने समस्त जैन संसार को झंझोड़ डाला और अनेकों जैनेतरों को भी प्रभावित किया। सोनगढ़ जैसा अद्वितीय सुनिर्मित एवं सुव्यवस्थित नगर-केन्द्र, जयपुर का पंडित टोडरमल स्मारक भवन एवं संबंधित संस्थाएँ, देश-विदेशों में पचासों भव्य जिनालयों का निर्माण, विपुल मात्रा एवं संख्या में पुस्तकों का प्रकाशन एवं वितरण, उत्तम प्रचारतंत्र का निर्माण, आदि अनेक ऐसी उपलब्धियाँ हैं जो उनकी लक्ष्यनिष्ठा, नेतृत्वसामर्थ्य, संगठन-कौशल और सुनियोजित कार्यक्षमता के परिचायक हैं।

कई बार स्वामीजी के दर्शनों, सान्निध्य एवं चर्चा-वार्ता का लाभ मिला, एकबार सोनगढ़ जाने का भी सुयोग मिला। कई विषयों में मतभेद रहा—उनसे स्पष्ट अपना मतामत भी व्यक्त किया। उन्होंने इस मतवैभिन्य को भी अन्यथा नहीं लिया। हाँ, जो उनके पूर्वाग्रह थे, जो उनकी धुन थी, बिना किसी अन्य ओर दृष्टि दिये वह उन्हीं के कार्यान्वयन, अभिव्यक्ति एवं संपादन में लगे ही रहे। धार्मिक जड़ता, थोथे कर्मकांड और भौतिकता में ग्रस्त संसार को वह अध्यात्मवाद का अमृत-संदेश निरंतर देते रहे। दिगम्बर परंपरा में उनके विरोधी पर्यायप्त उग्र रहे, किंतु इस परंपरा को इस युग में कुल मिलाकर जितना लाभ स्वामीजी से पहुँचा है, उतना शायद किसी अन्य एक व्यक्ति से नहीं।

अब वह नहीं रहे। नब्बे वर्ष की परिपक्व वृद्धावस्था में स्वर्गवासी हुए। उनके जाने से एक अपूरणीय क्षति तो हुई ही है। हम दिवंगत आत्मा की शांति एवं सद्गति की भावना करते हुए, उस विलक्षण व्यक्तित्व के प्रति जो 'अध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी' के रूप में इस युग में लब्धप्रतिष्ठ रहा, अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

# स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा

**श्री यशपालजी जैन**
सस्ता साहित्य मण्डल
**नई दिल्ली**

श्री कानजीस्वामी के स्वर्गवास का समाचार मुझे दूरदर्शन पर मिल गया था। बड़ा दु:ख हुआ। दु:ख इसलिए कि देश की वर्तमान परिस्थिति में उनका शरीर हमारे बीच रहना आवश्यक था। समाज को शुद्ध और प्रबुद्ध बनाने के लिए उन्होंने जो कुछ किया, वह स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा। वह उच्चकोटि के साधक थे और आजीवन समाज के हित-चिंतन तथा हित-साधन में लगे रहे। उन्होंने विपुल साहित्य की रचना की। उनका साहित्य प्रेरणा का अक्षय स्रोत है।

लेखनी की तरह उनकी वाणी भी बड़ी उदात्त थी। वह ओजस्वी वक्ता थे। सबसे बड़ी बात यह है कि वह धर्म और दर्शन को मानव-जीवन के साथ जोड़ते थे, मात्र शास्त्रीय विवेचन उन्हें इष्ट नहीं था।

वह विद्वान थे, इसमें कोई संदह नहीं, लेकिन उन्होंने विद्वत्ता को भारभूत नहीं बनने दिया। धर्म-ग्रंथों में हमारे जीवन को ऊर्ध्वगामी बनने के लिए जो कुछ स्पृहणीय है, उसे उन्होंने आत्मसात किया और उसका दान समाज को मुक्तभाव से दिया।

मुझे दो-तीन बार उनके दर्शन करने, उनसे बातचीत करने और उनके प्रवचन सुनने का अवसर मिला था। वर्षों पहले की उनकी स्मृति अबतक मेरे मन पर बनी है। समाज को धर्मनिष्ठ बनाने के लिए उनमें बड़ी तड़प थी और अहिंसा के प्रति उनकी निष्ठा अचल थी।

उनके जाने से निश्चय ही समाज में एक ऐसा स्थान रिक्त हुआ है, जिसकी पूर्ति सहज ही नहीं हो सकती। मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी प्रेरणाएँ समाज को निरंतर लाभान्वित करती रहें।

# आत्मधर्म के महान प्रभावक

पंडित बंशीधरजी शास्त्री
एम०ए०
जयपुर ( राज० )

दिगम्बर जैन परंपरा के ज्ञात इतिहास में श्री कानजीस्वामी जैसा जैनधर्म का प्रभावक व्यक्ति ढूँढे से भी नहीं मिलता, यह बात नि:संकोच कही जा सकती है। आचार्यप्रवर कुन्दकुन्द का नाम-स्मरण गौतम गणधर के बाद किया जाता है, उसकी महत्ता श्री स्वामीजी ने सिद्ध की थी। उनके महान ग्रंथराज समयसार ने स्वामीजी की विचारधारा बदली। उनकी नियमित शास्त्र-स्वाध्याय परंपरा ने लाखों व्यक्तियों के जीवन में आत्मकल्याण की भावना जागृत की थी। मात्र क्रियाकांड को धर्म तो अनेक रूपों में माना जाता है, जैन समाज भी उससे अछूता नहीं था। व्रत, उपवास, दान, पूजा आदि सभी क्रियाऐं तभी मोक्षमार्ग में सार्थक हैं—जब उनके मूल में आत्मज्ञान रूपी भेद-विज्ञान हो—अन्यथा वे सब क्रियाऐं संसारवर्द्धक ही हैं, यह तथ्य अनेक आचार्यों, विद्वानों ने अपनी-अपनी रचनाओं में लिखा था, किंतु उन्हें कौन पढ़ना चाहता था ? अगर कोई पढ़ता भी तो उसके मर्म को कौन समझता ?

इसीप्रकार सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की चर्चा भी सर्वत्र की जाती थी, किंतु उनके स्वरूप की ओर दृष्टि कौन देता था, उनके सर्वज्ञ-स्वरूप के फलितार्थ का कभी किसी ने विचार ही नहीं किया ? सर्वज्ञता का फलितार्थ 'क्रमबद्धपर्याय' सुनिश्चित है, किंतु सर्वज्ञता का गुणगान करनेवालों की दृष्टि में यह सुनिश्चित सिद्धांत ध्यान में ही नहीं आया था। कार्तिकेयानुप्रेक्षा, भैया भगवतीदासजी आदि ने इस विषय को उसीरूप में रखा था, जिसमें श्री स्वामीजी ने रखा था, किंतु कुछ तथाकथित शास्त्रज्ञ इस सुनिश्चित सिद्धांत का ही विरोध करते थे। जैन मान्यता में सृष्टि का किसी को कर्ता नहीं माना गया, तब किसी भी घटना का स्वयं घटित होना ही स्वयंसिद्ध होता है, उसमें पर की अपेक्षा क्यों हो ? भले ही उसे निमित्त संज्ञा ही क्यों न दें ?

श्री स्वामीजी ने ७० वर्षों के दीर्घकाल में पहले श्वेताम्बर एवं बाद में दिगम्बर साहित्य का गहन अध्ययन किया था। उसी का परिणाम था कि उन्होंने क्रमबद्धपर्याय, निमित्त-उपादान, धर्म, पुण्य एवं पाप आदि विषयों पर शास्त्रसम्मत प्ररूपणा की थी, भले ही लोक में उसमें विरोध दिखे। उन्होंने आत्मतत्त्व का विवेचन किया, उसकी इस युग में ऐसी आवश्यकता है जिसे भौतिकवादी भी अनुभव करने लगा है। यही कारण है कि अनेक प्रकार के विरोधों के बावजूद भी उनका प्रभाव देश-विदेश में सर्वत्र बढ़ता गया।

उन्होंने विरोधियों को मौन भाव से सहन किया था, वे 'माध्यस्थ भावं विपरीतवृत्तो' को

पूर्णरूप से मानते थे। उन्होंने विरोधियों की हीन से हीन वृत्ति का भी विरोध नहीं किया। हाँ, यदि किसी ने जिज्ञासु वृत्ति से कोई शंका की तो वे अवश्य समाधान करते थे।

उनके द्वारा सत्साहित्य का एवं स्वाध्याय-परंपरा का अभूतपूर्व प्रचार हुआ था। उनके उपदेशों से प्रभावित समाज ने यत्र-तत्र सैकड़ों जिनालय स्थापित किये, जहाँ आज लाखों मुमुक्षु अपना आत्मकल्याण कर रहे हैं। उन्होंने अनेक बार उत्तर-दक्षिण के तीर्थों की वंदना की। जिनालय-निर्माण या प्रतिष्ठाओं के प्रसंग से अनेक स्थानों पर—केनिया (नैरोबी) जैसे विदेश में भी गये; उन्होंने वहाँ भी आत्मज्ञान को ही मुख्यता दी। उनके उपदेशों से प्रभावित होकर अनेक स्थानों पर मुमुक्षु-मंडल बनाए गए। सोनगढ़ तो तीर्थतुल्य ही बन गया। आगममंदिर का तो जैनपरंपरा एवं इतिहास में अद्वितीय स्थान बना रहेगा।

उनके उपदेशों-प्रवचनों का लाभ अधिकाधिक लोगों को मिले इस उद्देश्य से आत्मधर्म पाँच भाषाओं में नियमितरूप से निकल रहा है। वीतराग-विज्ञान के शिक्षण का कोमलमति बालकों को लाभ मिले-इसलिये परीक्षालय खोला गया और सैकड़ों स्थानों पर विद्यालय खुले जहाँ आज प्रतिवर्ष हजारों बालक-बालिकाऐं शिक्षा पा रहे हैं। इस दृष्टि से जयपुर के टोडरमल स्मारक भवन और उसमें स्थित विद्यालय का स्थान सर्वोच्च है, जहाँ से प्रतिवर्ष एक दर्जन विद्वान, शास्त्री एवं आचार्य बनकर निकलने लगे हैं। इससे जैन समाज में विद्वानों की कमी नहीं रहेगी।

इसीप्रकार स्वामीजी के सद्उपदेशों से प्रभावित होकर समाज ने तीर्थ संरक्षण के महान कार्य का बीड़ा उठाया है, जो आज श्री बाबूभाई के नेतृत्व में सतत् प्रगतिशील है।

स्वामीजी के उपदेशों, प्रवचनों, चर्चा-वार्ता से प्रभावित समाज में अनेकों विद्वान हुए—जिनमें श्री रामजीभाई, श्री लालचंदभाई, श्री खीमचंदभाई, श्री बाबूभाई, श्री युगलजी तथा डॉ० हुकमचंदजी भारिल्ल आदि विद्वान उनके कार्यों को निरंतर बनाए रखने के लिए सतत् जागरूक एवं प्रयत्नशील हैं। स्वामीजी के तत्त्वोपदेश से जो प्रभावात्मक कार्य हुए व हो रहे हैं तथा होंगे—उनका सही महत्त्व विरोधी तो क्या उनके समर्थक भी नहीं जान पा रहे हैं। वस्तुतः १००-२०० वर्ष बाद के इतिहासकार ही उनका निष्पक्ष महत्त्व जान सकेंगे।

स्वामीजी के निधन से सोगनढ़ में कोई कमी आएगी, ऐसा मुझे नहीं लगता। उनका देहांत तो निश्चित ही था, अतः उसके लिए दुःख तो क्या करें ? हाँ, उनके गुण-स्मरण अवश्य करें और उन पर चलने का प्रयत्न करें।

स्वामीजी के अनेक ऐसे गुण हैं जिन्हें लेखनी के छोटे से आकार में लिखा नहीं जा सकता, फिर भी उन सबको स्मरण करते हुए उनके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ एवं भावना करता हूँ कि उनके द्वारा जागृत समाज आत्मकल्याण की ओर सदा उन्मुख रहे।

## स्वामीजी की सेवायें अमूल्य हैं

महामहोपाध्याय
**डॉ० हरीन्द्रभूषणजी जैन**
रीडर, विक्रम विश्वविद्यालय
**उज्जैन ( म०प्र० )**

हमें यह समाचार सुनकर अत्यंत दु:ख हुआ कि जैन आध्यात्मिक सत्पुरुष कानजीस्वामी का दिनांक २८-११-८० को देवलोक हो गया।

लगभग २३ वर्ष पूर्व, मुझे अपने पिता श्री ब्रह्म० छोटेलालजी महाराज की प्रेरणा से उन्हीं के साथ लगभग डेढ़ माह तक सोनगढ़ में स्वामीजी के उपदेशों के श्रवण करने का अलभ्य अवसर उपलब्ध हुआ था। उस समय मैंने अनुभव किया था कि स्वामीजी ने अपने त्याग, तपस्या और तत्त्वज्ञान से जैनधर्म के इतिहास में एक नये युग का निर्माण किया है।

यह सत्य है कि स्वामीजी का पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है, फिर भी उनकी आध्यात्मिक प्रभा, सदैव हमारा कल्याण-पथ आलोकित करती रहेगी।

जैनधर्म और संस्कृति के लिए स्वामीजी की सेवाएँ अमूल्य हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि भविष्य उनके अवदान का सही मूल्यांकन करेगा।

हम कामना करते हैं कि स्वामीजी परम-कल्याण को प्राप्त हों।

**''देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।**
**तथा देहान्तरप्राप्ति धीरिस्तत्र न मुह्यति॥''**

---

## उनकी वाणी मेरे हृदय में बसी है

**मुनि श्री माणकविजयजी**

भारत ही नहीं, अपितु सारे विश्व के एक सर्वोत्तम आध्यात्मिक संत सद्गुरु कहानदेव के देह-विलय से मेरे चित्त को गहरा दु:ख पहुँचा है। दु:ख व्यक्त करने का मेरे पास एक भी शब्द नहीं है। कई महीनों तक यह दु:ख मेरे चित्त से हटना कठिन है। मेरे दिल और दिमाग पर एक बहुत बड़ी भारी चोट पहुँची है, तथापि निरंतर उनकी वाणी मेरे हृदय में बसी है और सुनता हूँ—इसलिए मेरे लिए तो वह सद्गुरु जीवंत ही जीवंत है।

## उनका उपकार कभी भुलाया नहीं जा सकेगा

क्षुल्लक श्री सुरत्नसागरजी

अखबार में पढ़कर एक भाई ने बताया कि श्री कानजीस्वामी का स्वर्गवास हो गया है। मैं उस समय उन्हीं का कैसेट-प्रवचन सुन रहा था। बहुत दु:ख हुआ। बीसवीं सदी में जैनधर्म का उद्योतन करनेवाला एक महापुरुष आया और आज वह हमारे बीच से चला गया। स्वामीजी ने जो जैनधर्म का प्रकाश किया, वह किसी ने नहीं किया। जब समाज अज्ञान-अंधकार में डूबा हुआ था, क्रियाकांड में धर्म मान रहा था, प्रवचनों में क्रियाकांड-कथा-कहानी ही चलते थे; स्वामीजी ने जैनतत्त्व का उद्‌घाटन किया, आत्मा के धर्म के वास्तविक स्वरूप को बताया, अज्ञान-अंधकार को नष्ट किया। इन प्राणियों पर उनके महान् उपकार हैं, शब्दों में नहीं कहा जा सकता। उनका उपकार कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। उन्होंने सोते हुए आत्माओं को जगा दिया। अनेकों कठिनाइयों का, विरोध का, सामना करना पड़ा, पर सत्यमार्ग को नहीं छोड़ा, प्राणों की बाजी लगाकर सत्यमार्ग पर दृढ़ रहे। उनके चले जाने से अपूरणीय क्षति हुई है, उसे अब कोई पूरा नहीं कर सकेगा। धन्य हैं वे! सही मार्ग बताकर, आत्माओं को जगाकर, सबके हाथों में ज्ञान-दीपक देकर चले गये। उनके द्वारा बताया मार्ग सुदृढ़ रहे, सदा चलता रहे, यही चाहता हूँ। जिन आत्माओं ने उनका सान्निध्य प्राप्त किया, वे भी अपनी ज्ञान-ज्योति को जला सकें। आप सब मिलकर उनका मार्ग प्रशस्त बनाये रखें। उनका प्रवचन बहुत सूक्ष्म है, तत्त्व को बहुत गहराई से बतलाता है। वह आत्मा शीघ्र ही मुक्ति को प्राप्त करे यही शुभकामना है।

---

## उनके बताये मार्ग पर अडिग रूप से चलता रहूँ

श्री पूरणचंदजी गोदीका
जयपुर (राज०)

गुरुदेवश्री ने मेरे ऊपर महान उपकार किया है और आध्यात्मिक अमृतवाणी पिलाकर मेरे जैसे अनेक पामरों को सुख का सच्चा रास्ता दिखाया है और उस पर चलने की प्रेरणा दी है। वह प्रेरणा मेरे जीवन में हमेशा बनी रहे तथा उनके बताये मार्ग पर जीवन भर अडिगरूप से चलता रहूँ—यही भावना है।

आचार्यश्री कुन्दकुन्ददेव ने स्वयं विदेहक्षेत्र जाकर तीर्थंकर की दिव्यध्वनि सुनी और उसे लिपिबद्ध करके इस संसार से पार उतरने का मार्ग बताया। पूज्य स्वामीजी ने उन कुन्दकुन्द आचार्य की वाणी का मर्म खोलकर हम पर अनन्त उपकार किया है। उनके बताये हुए धर्म को हम हमेशा याद रखें और उनके बताये मार्ग पर चलते रहें, एक बार फिर यही भावना व्यक्त करते हुए उनके चरण-कमलों में मैं अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

---

## अध्यात्म-जगत में वे सदा रहेंगे

**प्रो० प्रवीणचंद्रजी जैन**
बी-२०, गणेशमार्ग, बापूनगर
**जयपुर ( राज० )**

"आत्मा अपने रूप में—स्वरूप में प्रतिष्ठित हो तभी परमानंद की अनुभूति होती है। आत्मा का स्वरूप ज्ञान है। अध्यात्म की ओर उन्मुख जन ही उसकी साधना करते हैं। अध्ययन और अनुसंधान उसमें सहायक होते हैं।" यह आध्यात्मिक संत स्व० श्री कानजीस्वामी का वह संदेश जो उन्होंने मुझे अपने द्वितीय जयपुर प्रवास के समय उच्चस्तरीय अध्ययन अनुसंधान संस्थान की स्मारिका के लिए दिया था। तभी उन्होंने मुझे बताया था कि उनकी प्रेरणा से चलनेवाले शिविर, कक्षाएं, विचारगोष्ठी आदि प्रवृत्तियों की सार्थकता इसी बात में है कि उनके द्वारा जैनागम के रहस्य को समझने-समझानेवाले लोग तैयार होते हैं, अध्यात्मप्रेमियों के समाज का निर्माण होता है।

आज स्वामीजी ने भौतिक देह छोड़ दिया है, पर अध्यात्म जगत में वे सदा सर्वदा रहेंगे। उनकी तात्त्विक स्थिति शाश्वत है। जब से उनके जीवन में परिवर्तन आया उन्होंने ने केवल अपने लिए बल्कि मानव समाज के लिए समयसार में मुखरित आध्यात्मिकता का द्वार निर्बंधरूप से खोल दिया। एक बड़ी अद्‌भुत धार्मिक क्रांति उन्होंने कर दी। वे युगदृष्टा थे और क्रांतदर्शी थी। उन्होंने भौतिकता के अभिशाप से चरमराती हुई मानवता को आशा भरे आध्यात्मिक जीवन की ओर उन्मुख कर दिया। जो भी उनके निकट संपर्क में आया उसका मतिभ्रम दूर हुआ, एक दिशा-बोध हुआ। लाखों व्यक्ति अपनी ओर-आत्मा की ओर देखने लगे। देश-विदेश में जैनागम की महिमा बढ़ी।

ऐसे युगनिर्माता महामहिम स्वामीजी के प्रति मेरी भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित है!

यह एक बड़ा अवसर है समाज के प्रबुद्धजनों के लिए। वे जागरूकता के साथ आगे बढ़ें, अंधकार की ओर ले जानेवाली रूढ़ियों से प्रभावित न होकर अध्यात्म के रहस्य को जन-जन तक पहुँचाने के लिए जो भी हो सकता हो करें, करायें।

## दिगम्बर समाज पर उनका महान उपकार है

श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन
संपादक, वीर
मेरठ ( उ०प्र० )

पूज्य कानजीस्वामी का पार्थिव शरीर नहीं रहा यह विश्वास नहीं होता, परंतु हर जीव को एक दिन मृत्यु को प्राप्त होना है, यही सोचकर मन मसोस कर रह जाने के लिए बाध्य होना पड़ता है। स्वामीजी से मुझे साक्षात् परिचय का सौभाग्य तो नहीं मिला पर पिछले दशक में उनको लेकर जो विवाद चला और कुछ पंडितों ने जिसप्रकार से उनको व उनके साहित्य को बदनाम करने की कुचेष्टा की और इन सब विषम परिस्थितियों में स्वामीजी जिसप्रकार अविचल अडिगता से अपने कार्य को करते रहे, कभी उन्होंने द्वेषरूप हो किसी विवाद का उत्तर नहीं दिया, वह उनकी कर्मठता, शांतिप्रियता एवं महानता का द्योतक है। दिगम्बर समाज पर उनका महान उपकार है। गुजरात को उन्होंने कर्मस्थली चुना और अनेकों लाखों जैन बंधुओं को दिगम्बरत्व की ओर श्रद्धावनत् कराया। जहाँ दिगम्बर जैन समाज का नामोनिशान नहीं था, वहाँ आज अनेकों भव्य-जिनालय एवं दिगम्बर धर्म के अनुयायी आज दिखाई पड़ते हैं, यह सब स्वामीजी की देन है। दिगम्बर जैन तीर्थों की रक्षा हेतु ध्रुवफण्ड बनाये जाने की योजना उनकी अलौकिक सूझ-बूझ व प्रतिभा का द्योतक है। इसके लिए आनेवाली पीढ़ी स्वामीजी को सदैव स्मरण करती रहेगी। पूज्य स्वामीजी ने सबसे बड़ा उपकार विद्वत्वर्ग पर किया है। विद्वत्वर्ग समाज में जिस प्रतिष्ठा को खो चुका था उसे स्वामीजी ने पुनः प्रतिष्ठापित किया। पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से निकले विद्वानों के रूप में स्वामीजी सदैव अमर रहेंगे तथा जो लोग उनके विरोध में लगे रहे वे भी यथासमय अपनी भूल को समझेंगे ऐसा मुझे विश्वास है।

पूज्यश्री कानजीस्वामी को मेरी विनयपूर्वक श्रद्धांजलि!

---

### पंडित ज्ञानचंदजी द्वारा धर्मप्रभावना

श्री पंडित ज्ञानचंदजी दिनांक ४-१२-८० से १७-१२-८० तक अशोकनगर, गुना, राघोगढ़, आरोन, मुंगावली, चंदेरी, खनियाधाना, ललितपुर में गये। तीनों समय समयसार, छहढाला, मोक्षमार्गप्रकाशक पर आपके प्रवचन चलते थे, जिससे समाज में काफी प्रभावना हुई।

इन १४ दिनों में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट बम्बई को लिखाई गई राशि में से रु० १,०१,०९०.०० (एक लाख एक हजार नब्बे) नगदी प्राप्त हुए तथा रुपये ३,७९२.०० नये नगदी प्राप्त हुए। — **माणिकलाल आर० गांधी**

## संपूर्ण जैन जगत की अपूरणीय क्षति

जैन समाज के सर्वाधिक चर्चनीय व्यक्तियों में से एक थे स्व० श्री कानजीस्वामी। लगभग आधी शताब्दी तक उनके व्यक्तित्व की सर्वत्र धूम मची रही। वह जैनागम के अनन्य एवं उत्साही प्रेमी थे। उनकी विचारधारा से मतभेद रखते हुए भी उनके जिनवाणी-प्रेम पर उंगली उठाना किसी भी तरह न्यायसंगत नहीं होगा। आज समाज में स्वाध्याय के प्रति जो अद्‌भुत लगाव देखने में आ रहा है, उसका श्रेय स्वामीजी को ही है। जैन साहित्य के व्यापार प्रसार एवं धार्मिक शिक्षण-शिविरों के आयोजनों की प्रेरणा मूलरूप में उन्हीं से प्राप्त हुई। उनके इस उपकार को सबको सहज भाव से स्वीकार करना ही चाहिए। उनके निधन से संपूर्ण जैन जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।

उनके वियोग में जो रिक्तता उत्पन्न हुई है, उसे भरने का सामूहिक प्रयत्न होना चाहिए। आशा है कि उनके अनुयायी विवेकपूर्वक स्वामीजी के मिशन को आगे बढ़ायेंगे तथा सम्यक् आलोचनाओं पर ध्यान देते हुए अपेक्षित सुधारों के लिए सदैव सचेष्ट रहेंगे। मैं उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ!

— **श्री नरेन्द्रप्रकाशजी जैन,** प्राचार्य, पी०डी० जैन इंटर कॉलेज, फिरोजाबाद (उ०प्र०)

---

## अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किये

**डॉ० राजकुमारजी जैन साहित्याचार्य**
**आगरा** (उ०प्र०)

खेद है कि श्रद्धास्पद श्री कानजीस्वामी के निधन से जैन समाज के मध्य से अध्यात्म एवं जैन तत्त्वज्ञान का एक अद्‌भुत एवं निस्तुल व्याख्याता सदा के लिए उठ गया। इस युग में अध्यात्म एवं जैन तत्त्वविधा के स्पष्ट एवं दर्पणवत् विशद् तथा शृंखलाबद्ध विवेचन एवं विश्लेषण करनेवालों में असंदिग्ध रूप से उनका स्थान सर्वोपरि था। उन्होंने अध्यात्म की जो सरस एवं प्रभावी धारा प्रवाहित की, उससे न केवल विद्वद्वर्य को ही सम्यक् दृष्टि का लाभ हुआ, अपितु सहस्त्रों श्रीमंतों का बहिरात्मत्व भी विगलित होकर अंतरात्मत्व की भास्कर ज्योति से ज्योतिर्मय हो उठा। उनके व्यक्तित्व में निश्चय एवं व्यवहार का अनुपम सामंजस्य था। पर समाज के एक वर्ग में उन्हें ऐकान्तिक निश्चयनयी एवं व्यवहारविरोधी मान लिया, जबकि उनकी विशुद्ध व्यवहाराश्रित जैन प्रभावना के प्रतीक इस युग के उदांत आदर्श हैं तथा भावीसमाज के लिए भी अनुकरणीय मान सिद्ध होंगे। जिनशासन की सेवा हेतु उन्होंने जीवन में अद्वितीय कीर्तिमान स्थापित किया।

स्वामीजी के निधन से उनके सातिशय व्यक्तित्व के प्रति निष्ठावान भक्त वर्ग का दायित्व काफी बढ़ गया है। उनके द्वारा प्रज्वलित अध्यात्म, जैन तत्त्वविधा एवं जैन प्रभावना का दीप अपनी अभेद्य ज्योति-शिखाओं से ज्योतिर्मय होकर किसप्रकार अविद्या एवं भ्रांति के तमस् को शताब्दियों तक निर्मूल करता है; इसका विशेष ध्यान रखना है। आशा है, जिनशासन के प्रति अनन्य निष्ठा, वीतरागभाव एवं दूरदर्शिता के साथ किये गये प्रत्येक प्रयत्न में उसे पूर्ण सिद्धि मिलेगी।

मैं स्वामीजी के समत्त्वोन्मुख आध्यात्मिक व्यक्तित्व के प्रति विनतभाव से अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

---

## यह सब उनके आशीष का ही फल है

पूज्य कानजीस्वामी के असामायिक निधन को सुनकर सारा जैन समाज स्तब्ध रह गया है। उन्होंने अध्यात्म जगत की जो पुनीत सेवा की है, उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। आज समाज में जगह-जगह पर मुमुक्षु-मंडलों द्वारा जिस धार्मिक भावना का प्रचार किया जा रहा है, वह सब पूज्य स्वामीजी के अध्यात्मरूपी स्रोत का प्रसार करने में सहायक होने के नाते उन्हीं की देन है।

पूज्य स्वामीजी के माध्यम से जगह-जगह पर प्रशिक्षण केंद्रों द्वारा जो धार्मिक पाठ पढ़ाया जा रहा है, यह सब उनके आशीष का ही फल है। यद्यपि आज वह शरीर से मुक्त हो गये हैं परंतु उनकी साधना, धार्मिक प्रेरणा, और सहिष्णुता ने उन्हें महापुरुषों की तरह अमर बना दिया है। हमारी सच्ची श्रद्धांजलि उनके प्रति तभी साकाररूप धारण कर सकती है, जब हम उनके मार्ग का अनुसरण करें, और संसार में उनकी यशोगाथा के अनुरूप कार्य करने में संलग्न रहें।

— **शीलचंद्र जैन शास्त्री,** उपाध्यक्ष, अ० भा० दि० जैन परिषद, मेरठ (उ०प्र०)

जयपुर में

**जयपुर ( राज० )** - दिनांक १६-१२-८० को दिगम्बर जैन समाज बापूनगर संभाग एवं पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से टोडरमल स्मारक भवन में शोक-सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता प्रो० प्रवीणचंदजी ने की।

**मुलतान दि० जैन समाज के अध्यक्ष श्री न्यामतरामजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा**—मोक्षमार्ग के सच्चे स्वरूप का निर्णय हमें गुरुदेवश्री के मिलने के बाद हुआ। हम तो स्वर्ग और मोक्ष में कुछ अंतर ही नहीं समझते थे। स्वामीजी ने हमें सत्यमार्ग दिखाया है।

**प्रो० मानमलजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा**—पूज्य स्वामीजी ने आत्मतत्त्व को स्वयं पहचाना और दूसरों को बताया। हम उनके बताये मार्ग पर चलें, यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

**श्री बिरधीलालजी सेठी, अध्यक्ष, राजस्थान दि० जैन परिषद् ने कहा**—पूज्य कानजी स्वामी इस युग के संत पुरुष थे। उन्होंने हमें समयसार का प्रकाश देकर अभूतार्थ से भूतार्थ की ओर प्रेरित किया। समाज में इतना बड़ा प्रभावशाली कार्य युगों बाद पूज्य स्वामीजी ने ही किया है।

**श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने कहा**—एकाएक अंधकार छा गया ज्ञान के क्षेत्र में, अध्यात्म-जगत् में। ...लोग कहते हैं सूर्यास्त हो गया, पर अस्त सूर्य तो पुनः उग आता है; गुरुदेव के साथ तो कुछ और ही हो गया है।

**वीरवाणी के संपादक पंडित भंवरलालजी न्यायतीर्थ ने राजस्थान दि० जैन महासमिति तथा दि० जैन संस्कृत महाविद्यालय की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा**— श्री कानजीस्वामी इस युग के निर्माता थे, उन्होंने एक बहुत बड़ी क्रांति समाज में की जो कि कोई साधारण आदमी नहीं कर सकता। ....वे एक निर्भीक व्यक्ति थे, सत्यधर्म को उन्होंने डंके की चोट पर समाज के सामने रखा।

**जयपुर प्रिंटर्स की ओर से श्री राजमलजी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा**—पूज्य स्वामीजी सूर्य की भाँति प्रकाशमान थे। वर्तमान में जो मोक्षमार्ग तिरोभूत हो गया था उसे आविर्भूत करके स्वामीजी ने भव्य जीवों के प्रति अनंत उपकार किया है।

**प्रसिद्ध समाजसेवी श्री तेजकरणजी डंडिया ने पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति श्रद्धासुमन**

**अर्पित करते हुए कहा**—निश्चित ही पूज्य गुरुदेवश्री क्रांतिकारी युगपुरुष थे। आज जो भी चमक-दमक व निश्चय-प्ररूपक कथन किये जाते हैं, वे सब उन्हीं के कारण हैं।

**राजस्थान जैन सभा की ओर से श्री राजकुमारजी काला ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा**—पूज्य स्वामीजी ने जिनशासन की महिमा बताने में अपना जीवन लगा दिया। पूज्य गुरुदेव के जाने से क्षति तो बहुत हुई है, किंतु आज भी वे हमारी आँखों से ओझल नहीं हैं।

**अ० भा० जैन युवा फैडरेशन की ओर से ब्र० पंडित जतीशचंदजी शास्त्री ने पूज्य स्वामीजी का उपकार मानते हुए कहा**—उनसे हमें, हमारे छात्रवर्ग को, युवावर्ग को तथा मुमुक्षु समाज को जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति संभव नहीं है। उनकी वाणी आत्मा को झकझोर देती थी। वे कहते थे कि जीवन की कीमत पर भी आत्मज्ञान का सौदा महंगा नहीं है। अब ऐसी बात कौन सुनाएगा?

**डॉ० गोपीचंदजी पाटनी ने स्वामीजी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा**—जैन समाज और जैन विद्वानों में जो जागृति गुरुदेवश्री के माध्य से हुई है, वह सराहनीय है। उनका भौतिक शरीर आज हमारे बीच नहीं है, किंतु उनकी वाणी हमारे पास है।

**आत्मधर्म के संपादक डॉ० हुकमचंदजी भारिल्ल ने पूज्य स्वामीजी का परम उपकार मानते हुए कहा**—गुरुदेवश्री को मार्ग स्वयं खोजना पड़ा, बनाना भी पड़ा। उन्होंने सन्मार्ग स्वयं खोजा, स्वयं बनाया और स्वयं उस पर चले। हमें तो न मार्ग खोजना है, न बनाना है; उनके बनाये, उनके बताये मार्ग पर मात्र चलना है। क्या हम यह भी नहीं कर सकेंगे?..... सभी लोग कहते हैं कि आपकी जिम्मेदारी है। आप लोग भी कह रहे हैं, सैकड़ों पत्र आये हैं, उनमें भी यही लिखा है। पर उत्तरदायित्व सिर्फ हमारा नहीं, हम सब का है; वे सिर्फ हमारे नहीं, हम सबके धर्मपिता थे। आप हमें उपदेश देकर छुटकारा क्यों पाना चाहते हैं? उनका भार कोई एक नहीं उठा सकता, हम सबको मिलकर उठाना है। पिता छोड़कर चले गए, सब की बातों से लगता है कि वे भी हमारे पर जिम्मेदारी डालकर किनारा कसना चाहते हैं। यह नहीं चलेगा-हम सबको मिलकर उनके बताये मार्ग पर चलना है, उनके अधूरे कार्यों को पूरा करना है।

यदि हमने यह उत्तरदायित्व नहीं निभाया तो उनका कुछ बिगड़नेवाला नहीं, वे तो चले गए; अपना ही नुकसान होनेवाला है। हम सब मिलकर उनके वियोग के दु:ख को बाँटें, कंधे से कंधा मिलाकर चलें—इस भावना के साथ उनके प्रति अनंत श्रद्धा व्यक्त करता हूँ।

**प्रो० प्रवीणचंद्रजी ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा**—पूज्य स्वामीजी मानवमात्र

के लिये थे। उन्होंने आत्मा के धर्म की तथा 'क्रमबद्धपर्याय' जैसे सिद्धांतों की चर्चा की तो आत्मा और तत्त्व को सामने रखकर की। वे तो महामानव थे।

श्री पूरणचंदजी गोदीका, श्री महेंद्रकुमारजी सेठी, श्री सूरजमलजी पाटनी, श्री गुलाबचंदजी मलिकपुरवाले, श्री निर्मलकुमारजी इटोरया दमोह तथा पंडित सुदीपकुमारजी ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए पूज्य स्वामीजी को श्रद्धांजलि अर्पित की। **— अखिल बंसल**

**जयपुर ( राज० )** - श्री दिगम्बर जैन मंदिर छाबड़ान में प्रात:कालीन शास्त्र-सभा के समय श्री वीरेन्द्र वीर बज की अध्यक्षता में वैराग्य-सभा हुई। विभिन्न वक्ताओं द्वारा स्वामीजी की अलौकिक महानताओं पर प्रकाश डालते हुए उनको भावभीनी श्रद्धांजलि समर्पित की गई। अंत में शोक-प्रस्ताव पारित किया गया तथा णमोकार-मंत्र के जाप के साथ सभा समाप्त हुई। **—शरदकुमार**

**जयपुर ( राज० )** - श्री दिगम्बर जैन मंदिर सीवाड़ में पूज्य स्वामीजी को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु सायंकालीन शास्त्र-सभा के बाद एक सभा का आयोजन श्री कपूरचंदजी अजमेरा मलिकपुरवालों की अध्यक्षता में किया गया। जिसमें वक्ताओं ने पूज्य स्वामीजी की अमरकीर्ति पर कुछ प्रकाश डाला तथा नौ बार णमोकार-मंत्र के जाप के साथ सभा विसर्जित हुई।

**— सूरजमल मलिकपुर वाला**

**जयपुर ( राज० )** - दिनांक २९-११-८० को आदर्शनगर दिगम्बर जैन मंदिर में मुलतान जैन समाज की ओर से शोक-सभा आयोजित की गई जिसमें पूज्य स्वामीजी के आकस्मिक निधन पर गहरा दु:ख व्यक्त किया गया तथा शोक-प्रस्ताव पारित किया गया। **— जयकुमार जैन**

## पूज्य कानजीस्वामी के आकस्मिक निधन पर
## अ० भा० जैन युवा फैडरेशन द्वारा स्थान-स्थान पर शोक-सभाएँ

**करहल ( उ०प्र० )** - इस युग के महान आध्यात्मिक तत्त्ववेत्ता, विचारक-मनीषी संत पूज्यश्री कानजीस्वामी के आकस्मिक निधन का समाचार सुनकर स्थानीय शाखा के पदाधिकारी एवं सदस्यगण स्तब्ध रह गए। ऐसे समय में जबकि हम सबको तत्त्व सुनने तथा समझने की रुचि जागृत हुई थी, उनका इसप्रकार हमारे बीच से चले जाना हमें असहनीय है। उनके निधन से महान क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति होना इस समय में अत्यंत दुर्लभ है। वे हमें सांसारिक दु:खों से छूटने का जो मार्ग बता गये हैं, उस पर चलना ही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

हम सब उनके विछोह में दु:ख संप्तत हैं और कामना करते हैं कि वह आत्मा अपनी चरमोत्कृष्ट दशा सिद्धदशा प्राप्त करे और हम सब उनके अनुयायी बनें। **— रविकांत जैन**

**बिजौलियां ( राज० )** - जैन समाज की महान विभूति आध्यात्मिक संत गुरुदेव कानजीस्वामी के दु:खद निधन पर युवा फैडरेशन की स्थानीय शाखा के तत्त्वावधान में श्री रामेश्वरजी चित्तौड़ा की अध्यक्षता में शोक-सभा आयोजित की गई। समाज के प्रमुख लोगों ने स्वामीजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं तथा दो मिनिट का मौन रखा। — मंत्री

**रांझी-जबलपुर ( म०प्र० )** - पूज्य गुरुदेव के निधन के समाचार फैडरेशन के सदस्यों एवं स्थानीय समाज ने दिल पर पत्थर रखकर सुना। अध्यात्म युग के निर्माता, सत्य के निर्भय उद्‌बोधक, जैनागम के मर्मज्ञ हमारे बीच से सदा के लिए चले गए।

दिनांक ६-१२-८० को युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में, श्री एन० एल० जैन, आचार्य इंजीनियरिंग कॉलेज की अध्यक्षता में शोक-सभा हुई जिसमें पंडित ज्ञानचंदजी शास्त्री एवं श्री रतनचंदजी भारिल्ल आदि विद्वानों ने गुरुदेवश्री के जीवन-दर्शन पर प्रकाश डालते हुए उनका स्मरण किया। युवा फैडरेशन के सभी सदस्यों ने स्वाध्याय आरंभ करने का संकल्प लिया।

— अशोक जैन, अध्यक्ष

**गंजबासौदा ( म०प्र० )** - आध्यात्मिक संत कानजीस्वामी के निधन के समाचार सुनकर स्थानीय जैन समाज ने अपनी दुकानें तथा कारोबार बंद कर दिये तथा एक शोक-सभा का आयोजन किया। सभा की अध्यक्षता श्री भैयालालजी ने की जिसमें पंडित ज्ञानचंदजी 'स्वतंत्र', श्री गयाप्रसादजी, श्री गुलाबचंदजी अध्यापक, सेठ हीरालालजी, पंडित प्रेमचंदजी आदि ने पूज्य स्वामीजी के प्रति उद्‌गार व्यक्त करते हुए अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त की। णमोकार मंत्र का पाठकर सभा समाप्त की गई।

**शहडोल ( म०प्र० )** - श्री कानजीस्वामी के दिवंगत होने के प्रसंग में ३ दिसम्बर ८० को पंचायती जैन मंदिर में शोक-सभा का आयोजन किया गया। सभा में पूज्य स्वामीजी के गुणों पर प्रकाश डाला गया। डॉ० कन्छेदीलालजी, पंडित चुन्नीलालजी शास्त्री, पंडित बाबूलालजी वैद्य तथा श्री केसरीचंदजी एडवोकेट ने श्री कानजीस्वामी के व्यक्तित्व तथा दिगम्बर जैनधर्म के प्रति की गई सेवाओं के गुणपक्ष पर प्रकाश डाला। — रतनचंद जैन, व्याख्याता

**बाराँ ( राज० )** - श्री हजारीलालजी बज की अध्यक्षता में पूज्य कानजीस्वामी के दुखद निधन पर शोक-सभा आयोजित की गई। समाज ने स्वामीजी का महान उपकार मानते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उनके सम्मान में ५ मिनट का मौन रखकर णमोकार मंत्र का जाप किया।

— रतनकुमार जैन

**बम्बई ( महा० )** - दिनांक ७-१२-८० को बृहद् दिगम्बर जैन समाज की ओर से पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति श्रद्धांजलि-सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सेठ श्री लालचंद हीरालचंदजी ने की। श्री कांतिलाल जैन, डॉ० विद्याचंदजी, श्री धीरूभाई, श्री धन्यकुमारजी बेलोकर, श्री नेमीचंदभाई रखियाल, श्री हीराभाई दहेगाँव, श्री चिमनभाई मोदी, श्री प्राणभाई व श्री कांतिभाई शाह आदि ने अपने भाव व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं।

**विदिशा ( म०प्र० )** - स्थानीय जैन समाज ने पूज्य स्वामीजी के निधन के समाचार सुनते ही बाजार बंद कर दिया। रात्रि को शोक-सभा का आयोजन किया गया, जिसमें सहस्त्रों व्यक्तियों ने पूज्य स्वामीजी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। दिन में शांति-विधान का आयोजन भी किया गया।

**—राजेन्द्र जैन**

**किशनगढ़ ( राज० )** - श्री मूलचंदजी चौधरी की अध्यक्षता में शोक-सभा आयोजित की गई जिसमें सर्वश्री लादूलालजी पहाड़िया, रूपचंदजी गंगवाल, दीपचंदजी चौधरी, ताराचंदजी पाटोदी, एम.एल. जैन मैनेजर पंजाब नेशनल बैंक, पी.सी. कासलीवाल मैनेजर बैंक ऑफ बड़ौदा तथा सरदारसिंहजी ने आध्यात्मिक संत पूज्य कानजीस्वामी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

**अहमदाबाद ( गुज० )** - दिनांक ७-१२-८० को पंडित बाबूभाई मेहता की अध्यक्षता में शोक-सभा का आयोजन किया गया। जैन तथा जैनेतर लोगों ने हजारों की संख्या में उपस्थित होकर पूज्य कानजीस्वामी के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं।

**वर्धा ( महा० )** - दिनांक ३०-११-८० को श्री मूलचंदजी बड़जात्ये की अध्यक्षता में पूज्य कानजीस्वामी के आकस्मिक निधन पर शोक-सभा आयोजित की गई। सभा में सर्वश्री प्रा० विद्याधरजी उमाठे, प्रा० उमेशचंद सरोरे तथा सुदर्शनकुमारजी आदि ने स्वामीजी के जीवन पर विस्तृतरूप से प्रकाश डाला। समाज तथा विभिन्न संस्थाओं की ओर से शोक-प्रस्ताव भी पारित किया गया।

**बेगमगंज ( म०प्र० )** - पूज्य सद्गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के आकस्मिक निधन से स्थानीय समाज में शोक की लहर दौड़ गई। ब्र० आत्मानंदजी के सान्निध्य में शोक-सभा हुई जिसमें पूज्य गुरुदेवश्री को भावभीनी अश्रुपूरित श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गईं। एक दिन बाजार भी बंद रखा गया।

**— कस्तूरचंद**

**पावागिरि, ऊन ( म०प्र० )** - पंडित बाबूलालजी 'फणीश' की अध्यक्षता में शोक-सभा हुई। आपने स्वामीजी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा —'स्वामीजी इस जैन जगत के

आध्यात्मिक सूर्य थे, जिन्होंने जैनधर्म की महती प्रभावना की। अन्य वक्ताओं ने भी उनके गुणों पर प्रकाश डालते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

**इंदौर ( म०प्र० )** - स्थानीय दिगम्बर जैन उदासीन आश्रम के समस्त ब्रह्मचारियों की शोक-सभा हुई। शोक-प्रस्ताव पारित करते हुए सभी ने दिवंगत आत्मा को शांति लाभ की कामना करके मौन से कायोत्सर्ग कर सभा विसर्जित की। **— ब्र० दीपचंद जैन**

**शमशाबाद ( म०प्र० )** - स्थानीय दिगम्बर जैन नवयुवक मंडल के तत्त्वावधान में ख्याति प्राप्त आध्यात्मिक संत पूज्य कानजीस्वामी के निधन पर श्री पन्नालालजी भंडारी की अध्यक्षता में शोक-सभा आयोजित की गई। उपस्थिन जनसमूह ने २ मिनिट का मौन धारण कर अपने प्रिय संत को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मंडल के कार्यकर्ताओं ने अपने संयुक्त वक्तव्य में श्री कानजीस्वामी को बीसवीं सदी का अद्वितीय युगपुरुष निरूपित किया। **— संयोजक**

**खनियाधाना ( म०प्र० )** - जैन समाज के पथदर्शक आध्यात्मिक संत पूज्य कानजीस्वामी के असामायिक निधन पर स्थानीय जैन समाज में शोक की लहर छा गई। संपूर्ण बाजार बंद हो गया तथा शोक-सभा का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों लोगों ने महान संत को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। समाज के प्रतिष्ठित लोगों ने स्वामीजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए जैन समाज के लिए अपूरणीय क्षति बताई तथा उनके क्रांतिकारी जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। **— चौ० नरेन्द्र जैन**

**चंदेरी ( म०प्र० )** - आध्यात्मिक संत पूज्य कानजीस्वामी के निधन का समाचार मिलते ही बाजार तत्काल बंद हो गया तथा स्थानीय चौबीसी जैन मंदिर में शोक-सभा हुई, जिसमें महान आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। पूज्य संत ने जैन समाज में इतने विद्वान बनाए हैं कि विद्वानों की शून्यता कभी भी महसूस नहीं होगी। समाज पूज्य कानजीस्वामी का सदैव ऋणी रहेगा। **— श्रेयांसकुमार जैन**

**भीलवाड़ा ( राज० )** - इस युग के महान आध्यात्मिक संत पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के स्वर्गवास के समाचार सुनकर नगरवासी गहरे दु:ख में डूब गए। पूज्य स्वामीजी ने जैनतत्त्व को सही ढंग से प्रस्तुत करने का जो ऐतिहासिक व शिलालेखिक कार्य किया है, वह सदियों तक स्मरण रहेगा। दिनांक १-१२-८० को आयोजित शोक-सभा में सैकड़ों लोगों ने पूज्य स्वामीजी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। **— पी० के० अजमेरा**

**बयाना ( राज० )** - पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के अचानक स्वर्गवास के दुखांत समाचार को सुनकर स्थानीय जैन समाज शोक-मग्न है। सीमंधर प्रभु से प्रार्थना है कि समस्त जैन

समाज को इस महान दु:ख को सहन करने एवं पूज्य गुरुदेव द्वारा आत्मज्ञान की प्रज्वलित ज्योति को चिरस्थायी बनाने की शक्ति प्रदान करें।

**सरधना ( उ०प्र० )** - स्थानीय जैन बाल संघ द्वारा आयोजित समस्त जैन समाज की एक सभा पंडित शीतलप्रसादजी मवाना की अध्यक्षता में संपन्न हुई। सभा में आध्यात्मिक महान संत कानजीस्वामी के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त किया गया। पूज्य स्वामीजी की महान सेवाओं ने जैनधर्म तथा संस्कृति को विश्व में उजागर किया। उनकी सेवाओं को जब तक समाज रहेगा तब तक बराबर याद किया जाता रहेगा। — **प्रमोद जैन 'सरल'**

**खुरई ( म०प्र० )** - दिनांक ३०-११-८० को श्रीमंत सेठ ऋषभकुमारजी की अध्यक्षता में शोक-सभा आयोजित की गई, जिसमें पूज्य कानजीस्वामी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोक-प्रस्ताव पारित किया गया। दो मिनिट का मौन रखकर णमोकारमंत्र का जाप किया गया। शोक-संवाद पाते ही स्थानीय जैन समाज ने अपना व्यापार बंद कर दिया था। — **कमलकुमार शास्त्री**

**देहरादून ( उ०प्र० )** - स्थानीय दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल की ओर से श्री भरतेश्वरप्रसादजी की अध्यक्षता में शोक-सभा आयोजित की गई। विभिन्न मुमुक्षुओं के अतिरिक्त पंडित कैलाशचंदजी बुलंदशहरवालों ने पूज्य स्वामीजी के उपदेशों एवं जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

**दिल्ली** - दिगम्बर जैन समाज द्वारा आध्यात्मिक संत श्री कानजीस्वामी के महाप्रयाण के प्रसंग पर एक शोक-सभा श्री साहू श्रेयांसप्रसादजी जैन की अध्यक्षता में लाल मंदिर में हुई। उसमें समाज के प्रमुख व्यक्तियों ने—जिनमें श्री प्रेमचंदजी (जैना वाच कं०), श्री साहू अशोककुमारजी, श्री त्रिलोकचंदजी (भारतनगर), श्री नेमीचंदजी (साहू जैन ट्रस्ट), श्री रमेशचंदजी (पी०एस० मोटर), श्री कशमीरचंदजी (शांति विजय), श्री श्रीरामजी जैन, पंडित बाबूलालजी (कलकत्ता), पंडित नाथूलालजी, पंडित प्रकाशचंदजी हितैषी, श्री शांतिसागरजी आदि ने अपनी श्रद्धांजलियाँ समर्पित कीं। — **सुरेन्द्रकुमार जैन**

स्व० पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

जिनकी स्मृति ही शेष रह गई है।

Registration. No. RJ-2712

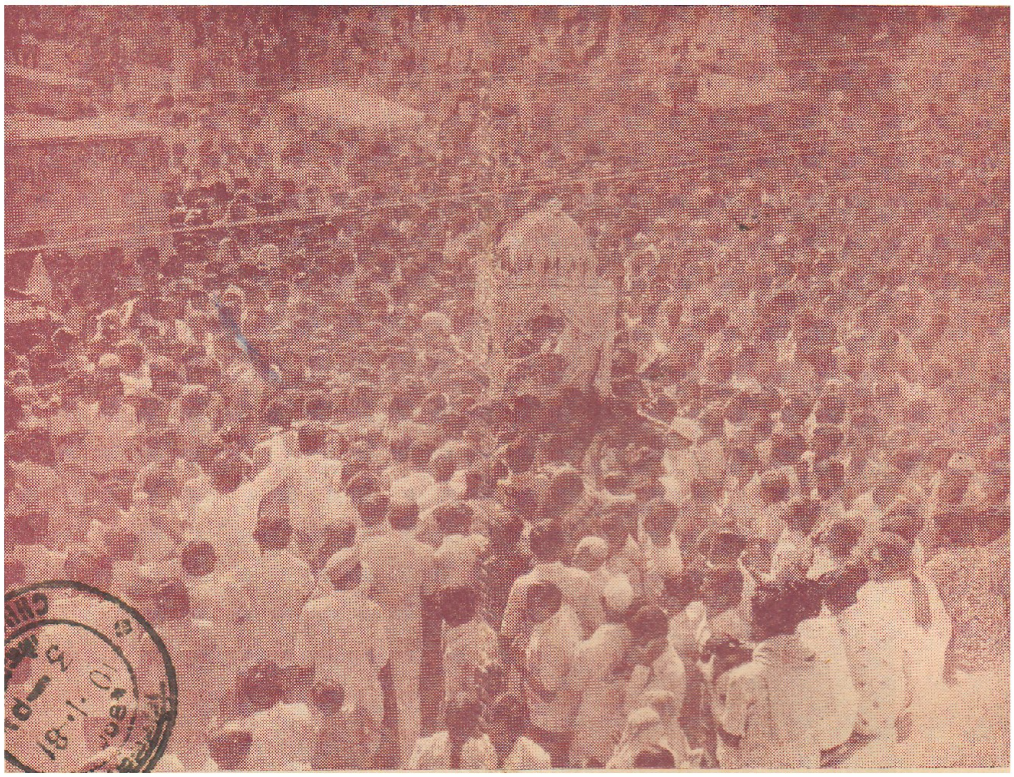

जाओ गुरुवर ! याद रखेंगे हम कृतज्ञ भारतवासी

मोह के, मिथ्यात्व के,
व्यवहार के मुर्दा-शरीरी!
देख लो! वह उड़ गया,
अध्यात्म का चैतन्य-हीरो!!
अब न वापिस आयेगा वह,
चिर-विरह के गीत गाओ-
"मंगलं भगवान वीरो,
मंगलं भगवान वीरो॥"

—फूलचंद 'पुष्पेन्दु', खुरई

Licence No.
P. P. 16-S.S.P. Jaipur City Dn.
Licensed to Post
Without Pre-Payment

*If undelivered please return to :*
**प्रबन्ध-संपादक, आत्मधर्म**
ए-४, टोडरमल स्मारक भवन, बापूनगर
जयपुर ३०२००४